(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 4, अक्तूबर, 2019
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-शाला

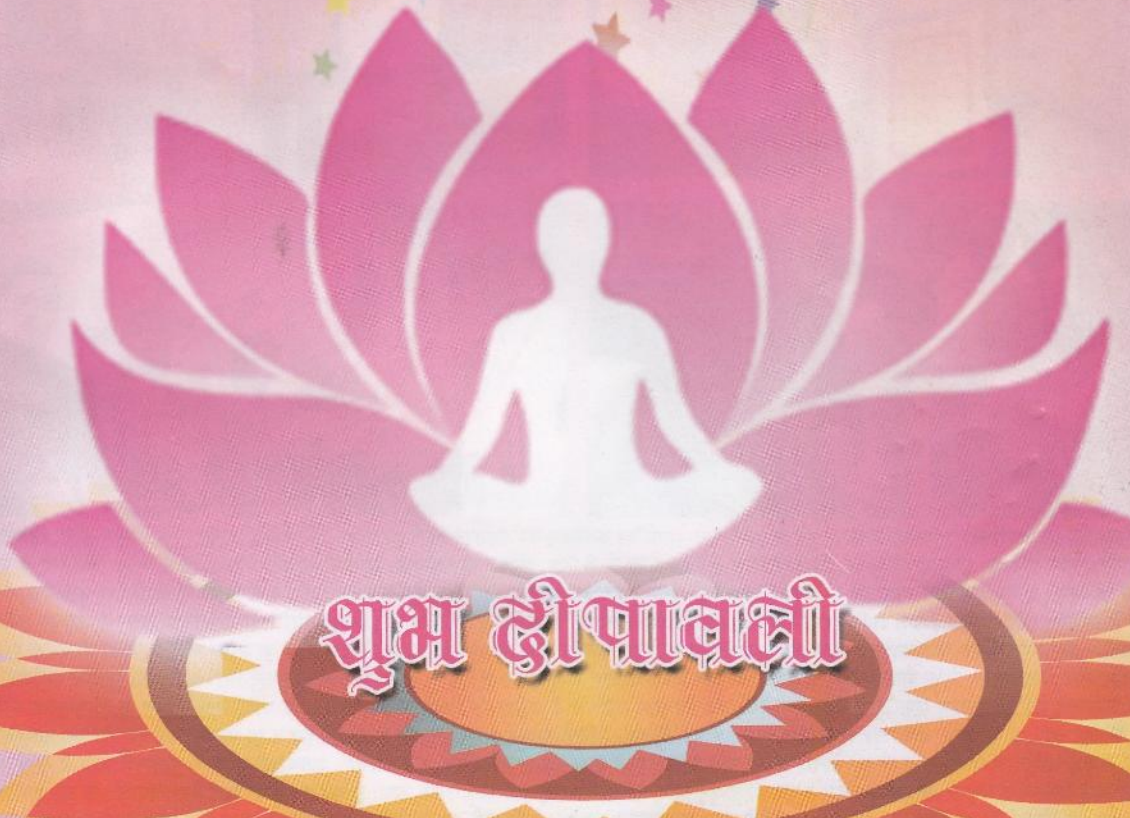

शुभ दीपावली

1. **आबूपर्वत (ज्ञानसरोवर) :** शिपिंग एविएशन टूरिज्म प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. मीरा, अमृता सरण, निदेशक (परसोनल), एयर इण्डिया, भ्राता संजय कुमार, रिसर्च स्कॉलर टूरिज्म, भ्राता जे.पी.सिंह, संयुक्त महाप्रबन्धक, एयरपोर्ट अथार्टी ऑफ इण्डिया, ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. सन्तोष एवं अन्य। 2.**गुरुग्राम (ओ.आर.सी.)-** शिक्षकों तथा कामकाजी महिलाओं के लिए आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दिल्ली के उप-मुख्यमंत्री भ्राता मनीष सिसोदिया, हंसेक्टिसाइड इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष भ्राता हरिचंद अग्रवाल, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.बृजमोहन भाई तथा डॉ.सविता बहन। 3.**रायपुर (चौबे कालोनी)-** छत्तीसगढ़ किसान सशक्तिकरण अभियान का शुभारम्भ करते हुए कृषि एवं जल संसाधन मंत्री भ्राता रविन्द्र चौबे, ब्र.कु.सरला बहन, ज्ञानामृत पत्रिका के मुख्य सम्पादक भ्राता आत्मप्रकाश, ब्र.कु.कमला बहन, इन्दिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.एस.के.पाटिल तथा ब्र.कु.सुमन्त भाई। 4.**सिरसा (शान्ति सरोवर)-** अनूठे कन्यादान एवं प्रभु समर्पण समारोह में केक काटने के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता गणेशीलाल जी, ब्र.कु.डॉ.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.कैलाश बहन, ब्र.कु.सुदेश बहन तथा ब्र.कु.बिन्दु बहन। 5.**नई दिल्ली-** रेडियो मधुबन 90.4 एफ.एम.के स्टेशन हेड ब्र.कु.यशवंत भाई को 'नेशनल कम्यूनिटी रेडियो अवार्ड 2019' से सम्मानित करते हुए केन्द्रीय सूचना तथा प्रसारण मन्त्री भ्राता प्रकाश जावडेकर। 6.**इटानगर-** अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता पी.खन्डू को माउण्ट आबू सम्मेलन में पधारने का निमन्त्रण देने के बाद ब्र.कु.जुनू बहन, डॉ.जयदेव साहू तथा अन्य उनके साथ। 7.**कोटा-** कोटा खुले विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता आर.एल.गोदारा, ब्र.कु.उर्मिला बहन तथा ब्र.कु.ज्योति बहन वृक्षारोपण करते हुए। 8.**दिल्ली-** नागठाणे सेवाकेन्द्र की एज्यूकेशन विंग की सेवाओं के लिए 'भारत गौरव अवार्ड' से ब्र.कु.डॉ.दीपक हरके को सम्मानित करते हुए केन्द्रीय जलशक्ति मन्त्री भ्राता रतनलाल कटारिया। साथ में ब्र.कु. डॉ.मृत्युंजय भाई।

संजय की कलम से –

सच्ची विजय दशमी

भारत अध्यात्म प्रधान देश है। हमारे त्योहारों का भी आध्यात्मिक रहस्य है। आज त्योहार तो मनाये जाते हैं, परन्तु उनका रहस्य भूलाया जा चुका है। हर वर्ष दशहरा अथवा विजय-दशमी का उत्सव भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। कई दिन पहले से ही रामलीला शुरू हो जाती है। बच्चे-बूढ़े सभी बड़े उत्साह से रावण के मरने तथा जलने का इन्तज़ार करते रहते हैं और जब दशहरे का दिन आता है तो खूब खुशियाँ मनाते हैं। अवश्य ही रावण हमारा शत्रु है वरना किसी मित्र-सम्बन्धी के मरने पर तो मातम छा जाता है। देखा जाये तो बुत सदा दुश्मन का ही जलाया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि यह रावण शत्रु कौन है और इसे हर वर्ष क्यों जलाते हैं? साधारण रीति से यदि किसी से पूछा जाये कि रावण कौन था तो यही उत्तर मिलता है कि वह लंका का राजा था जो इतना शक्तिशाली था कि उसने जल, अग्नि, वायु तथा काल को अपने पलंग के पाँवों से बाँध रखा था। उसे दशानन अर्थात् दस सिर वाला कहते हैं। परन्तु क्या यह बात सत्य हो सकती है कि किसी व्यक्ति के दस सिर हों? ऐसा व्यक्ति भला सोता कैसे होगा? यदि रावण सचमुच दस सिर वाला था तब तो आज भी उसके वंश का कोई व्यक्ति दस सिर ना सही तो चार-पाँच सिर वाला तो दिखाई देना ही चाहिए था। वास्तव में रावण किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है, ना ही दस सिर वाला कोई मनुष्य होता है। रावण माया का प्रतीक है और इसके दस सिर माया के काम, क्रोध आदि पाँच विकारों की नर में और इन्हीं पाँच विकारों की नारी में प्रवेशता के सूचक हैं। यदि रावण कोई सचमुच का राजा विशेष होता तो उसे एक बार जलाने से ही काम पूरा हो जाता परन्तु यह माया का ही अलंकारिक प्रतीक है इसलिए इसे हर वर्ष जलाते रहते हैं, जब तक कि यह रावण सचमुच जल जाये। दशहरा अथवा 'दश-हरा' का अर्थ है नर-नारी के दस विकारों को हरना। सच्चा दशहरा तभी होता है जब रामेश्वर परमात्मा पतित मनुष्यात्माओं को पुनः पावन अर्थात् निर्विकारी बना कर सच्चे राम-राज्य की पुनर्स्थापना करते हैं। दशहरा को विजय-दशमी भी कहते हैं। विजय-दशमी का भी भावार्थ है दस पर विजय पाना। मनुष्य पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों अर्थात् इन दस इन्द्रियों के द्वारा विकारों के वशीभूत होकर ही विकर्म करता है। अतः विकारों पर विजय पाना ही विजय-दशमी है।

रावण ने कौन-सी सीता को चुराया?

रामायण की कथा से तो साधारणतया यह समझा जाता है कि रावण ने सीता को चुराया था। इस कारण ही

शेष भाग पृष्ठ 7 पर

अमृत-सूची

- सच्ची विजय दशमी 3
- जबान के धनी और जबान के कंजूस (सम्पादकीय) 4
- आओ! धराशायी करें रावण (कविता) 6
- मत हो व्यसनों के अधीन (कविता) 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 8
- पत्र सम्पादक के नाम 10
- सचित्र सेवा-समाचार 11
- जो सोचें वह हो जाए -- कैसे? 12
- सचित्र सेवा-समाचार 14
- ज्ञान-दीप जगाना ही सच्ची दीवाली है 26
- सचित्र सेवा-समाचार 18
- रोगों का द्वार -- माँसाहार 20
- सचित्र सेवा-समाचार 22
- ईश्वरीय ज्ञान ने मेरी जिन्दगी बदल दी 24
- सचित्र सेवा-समाचार 26
- मनुष्य का जहरीला दांत - ईर्ष्या 27
- मानव, मानव से प्रेम करना सीखे 30
- ऊँची दीवारों से मिली ऊँची प्रेरणा 31
- कायदे के साथ फायदे भी जानें 32
- मधुबन है पिता का घर 33

ज़बान के धनी और ज़बान के कंजूस

एक कहावत है कि तलवार के घाव तो जल्दी भर जाते हैं पर जबान के घाव भरने में ज्यादा देर लगती है। हम देखते हैं कि हरेक देश की दण्ड-संहिता में तलवार से आघात पहुँचाने वाले व्यक्ति के लिए दण्ड निर्धारित है किन्तु जबान से घाव करने वाले व्यक्ति के बारे में वैसा कोई कड़ा दण्ड नहीं है। लोहे की तलवार से तन को आहत करने वाले व्यक्ति को तो कत्ल का अपराधी माना जाता है परन्तु जबान की तलवार से मन को आहत करने वाले व्यक्ति का कर्म वैसा बड़ा दण्डनीय अपराध नहीं माना जाता। यों सभाओं में और समाज में भाषण या वार्तालाप में शिष्टता का व्यवहार करने के लिए भी मार्यादायें प्रचलित हैं और सरकार के विरुद्ध या एक जाति को दूसरी जाति के विरुद्ध भड़काने एवं उकसाने के बारे में भी विधि-विधान हैं परन्तु व्यक्तिगत व्यवहार में तथा घरेलू एवं पारिवारिक वार्तालाप में यदि कोई किसी को अपने शब्द रूपी बाण से जख्मी करता है तो उसके अपराध के लिए कोई कड़ा दण्ड-विधान नहीं है।

ऐसा दण्ड निर्धारित न होने के कई कारण हो सकते हैं। शायद इस अपराध को दण्ड-संहिता में इसलिए सम्मिलित नहीं किया गया होगा कि इस प्रकार के रगड़े-झगड़े इतनी संख्या में होते हैं कि यदि सरकार अथवा पुलिस इन्हें भी दण्डनीय अपराध मान लें तो न्यायालय में ऐसे अपराधों की अनन्त लड़ी लग जाएगी। यह भी कारण हो सकता है कि ऐसे अपराधों को अदालत के कटघरे में कानूनी तौर पर सिद्ध करना कठिन होता है क्योंकि मन के घाव प्रगट नहीं होते और उसके लिए गवाह या दस्तावेज आदि भी नहीं होते। यह भी हो सकता है कि मन के घाव लगने में स्वयं व्यक्ति भी दोषी हो जो किसी बात को यों ही अपनी आदत के कारण महसूस कर गया हो। और, यह भी हो सकता है कि यह अपराध इतना आम हो कि इससे कोई छूटा न हर सकता हो। खैर इसके अपराध घोषित न होने का कारण कुछ भी रहा हो, इस बात से तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि जबान से किसी के मन को आहत और पीड़ित करना भी एक बहुत बुरा कर्म है।

कटु शब्द एक कुचक्र का उत्पादक

ध्यान से देखा जाए तो एक दृष्टि से जबान के घाव ज्यादा खतरनाक होते हैं, केवल इसलिए नहीं कि कटु शब्द से पीड़ित होकर कई व्यक्ति अपनी हत्या कर डालते हैं या कई परिवारों का संगठन टूट जाता है या परस्पर दुश्मनी के बढ़ने से कलह-क्लेश को बढ़ावा मिलता है बल्कि इसलिए भी कि यदि तलवार द्वारा कोई व्यक्ति जख्मी हो जाता है तो उसका जख्म उस तक ही सीमित रहता है परन्तु जब शब्द-प्रहार से कोई आहत होता है तो वह उत्तेजना, अपमान या अशिष्टता का अनुभव करने के परिणामस्वरूप सम्पर्क में आने वाले दूसरे व्यक्तियों को भी दुखी करता है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी गृहिणी को कोई कटु वचन बोलता है तो वह उद्विग्न होकर बच्चों या पति से खिन्न होकर बोलती है और पति बस में कन्डक्टर या यात्रियों से अथवा दफ्तर में अपने सहकारियों से लड़ पड़ता है अथवा बच्चों पर अपना गुस्सा निकालता है और बच्चों की अपने पड़ोस के बच्चों से झड़प हो जाती है और इस प्रकार समाज में यत्र-तत्र-सर्वत्र तनाव तथा पर-पीड़ा का कुचक्र अथवा भँवर-सा चल पड़ता है। कटु अथवा अभद्रता-पूर्ण वचनों से चेहरे की कान्ति सूख जाती है, मुख पर से मुस्कान मिट जाती है, मन से उत्साह नष्ट हो जाता है और श्रोता के स्वास्थ्य तथा चिन्तन को भी धक्का लगता है।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप

परन्तु कोई यह न समझ ले कि केवल कटुता अथवा अभद्रता ही वाणी के दोष हैं। वाणी के अनेक विकार हो सकते हैं। मान लीजिये कि कोई व्यक्ति बोलने में तो शिष्ट

और मधुर है परन्तु जरूरत से ज्यादा लम्बी-लम्बी बातें करता है। वह वाचाल है, बातूनी है। इधर की, उधर की, इसकी-उसकी बातें कर-करके वह हमारा ध्यान अपनी बातों में लगाये रखता है। इस प्रकार वह हमारे समय को हर लेता है अथवा नष्ट करता है। जीवन का माप समय ही से तो किया जाता है। अत: यह लफ्फाजी व्यक्ति भी तो हमारे जीवन को क्षति पहुँचाता है। देखने में तो वह हमारा निकटस्थ मित्र है परन्तु वास्तव में तो वह हमारी एकाग्रता, हमारी मानसिक शक्तियों और हमारे समय को हम से मीठी रीति से छीन रहा है अथवा उनका अपव्यय कर रहा है। लगता तो ऐसा है कि वह हमारा मन बहला रहा है परन्तु वास्तव में तो वह हमारे मन की वृत्तियों को एकाग्र होने में सहायक होने की बजाय उन्हें बिखरा रहा है। फिर, वह जब दो-चार बातें सुनाता है, तब हमें भी तो एक-न-एक बात सुनानी ही पड़ती है वरना तो ऐसा लगता है कि हम बात करना ही नहीं जानते या हमारा ज्ञान अति अल्प है। अत: परिस्थितिवश जब हम कुछ करते हैं, कोई गप्प हाँकते या कोई समाचार सुनाते हैं तो हमें भी तदानुसार ही आदतें पड़ जाती हैं। जिस प्रकार की बातें हम कहते और सुनते हैं वैसे ही तो हमारा स्वभाव बनता चला जाता है और हम इस बात से गाफिल होकर उस वाक्-ताल में कूद पड़ते हैं अथवा दूसरे शब्दों में हम भी अपने शब्द रूपी धन का जुआ, शब्दों की चौपड़ पर लगाना शुरू कर देते हैं। हम यहाँ युक्तियुक्त हास्य और विनोद के बारे में नहीं कह रहे हैं (वास्तव में हम देखते हैं कि युक्त विनोद भी शीघ्र ही अयुक्त होने लगता है) बल्कि हम तो बातूनीपन की आदत के बारे में कह रहे हैं।

बेमौका बातचीत

इसी प्रकार, बेमौका बातचीत से भी मनुष्य बहुत हानि पहुँचाता है। जो लोग शब्द-संयम वाले नहीं हैं, वे दूसरे का कल्याण सोचे बिना ही कुछ कह देते हैं। इस बात को यहाँ हम उदाहरण द्वारा कुछ स्पष्ट करते हैं। मान लीजिये कि एक व्यक्ति किसी जिज्ञासु को समझा रहा है कि ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा मनुष्य क्रोध को भी जीत लेता है और उसके अन्य मनोविकार भी नष्ट होने लगते हैं। इसी बात के दौरान एक तीसरा व्यक्ति वहाँ आकर बैठ जाता है और वह इस ज्ञान वार्तालाप का भागी न होते हुए भी कहता है, परन्तु मैं तो दो मास से यह ज्ञान सुन रहा हूँ और इस योग को सीख रहा हूँ, मेरा तो क्रोध का संस्कार नहीं मिटा और मैं तो समझता हूँ कि संसार में ऐसा कोई व्यक्ति है ही नहीं जिसमें क्रोध न हो। अब हो सकता है कि यह तीसरा व्यक्ति सच्ची बात कह रहा है परन्तु इस वार्तालाप में अपने विचार प्रगट कराने के लिए किसी द्वारा निवेदित किये जाने के बिना उसका बोल पड़ना अनाधिकार चेष्टा है और दूसरे के कल्याण कार्य में बाधा है। यद्यपि इस व्यक्ति ने यह वाक्य इस उद्देश्य से उच्चारित नहीं किया कि जिज्ञासु का कल्याण न हो तथापि उसके ये बोल शब्द-संयम की कमी के सूचक हैं। उसे चाहिए था कि जिज्ञासु से वार्ता समाप्त होने के बाद वह अपनी यह शंका प्रस्तुत करता। तब उसे समझाया जाता कि उसके योगाभ्यास में, ज्ञान की धारणा में या नियम-पालन में क्या कमी है जिस कारण से उसका क्रोध हल्का नहीं हो रहा। अब जब प्रारम्भिक कोटि के जिज्ञासु को ज्ञान दिया जा रहा है तो उसने एक अड़चन पैदा कर दी है और जिज्ञासु पर गलत प्रभाव डाला है जिससे कि उसके मन में योग सीखने का उत्साह उत्पन्न होने की बजाय उसका उत्साह क्षीण ही होगा। ऐसे ही यदि कोई व्यक्ति किसी के घर में विवाह के अवसर पर कह दे, 'राम नाम सत् है, सत्य बोलो गत है' तो वह भी बेमौका कथन ही तो होगा यद्यपि उसकी बात सही है।

अपने आप ही राय साहब

इसी प्रकार, संसार में आपको ऐसे भी बहुत लोग मिलेंगे जो बिना माँगे अपनी राय देते हैं। एक व्यक्ति अन्य से किसी संस्था के बारे में अपने विचार व्यक्त कर रहा है और तीसरा, उपस्थित व्यक्ति के कहे बिना, उस संस्था के विरुद्ध अपने विचार व्यक्त करना शुरू कर देता है। यह भी तो वैसे ही है जैसे कि किसी ऐसे व्यक्ति पर, जो लड़ाई के लिए तैयार न हो, यों अचानक ही हमला करना अथवा किसी की दाढ़ी में हाथ डालना।

शब्द-व्यय में कंजूस

फिर जैसे कुछ लोग शब्दों का फिजूल खर्च करते हैं वैसे ही कई लोग ऐसे भी हैं जो इस मामले में बहुत ही

कंजूस हैं। वे न तो किसी को नमस्ते या 'ओम शान्ति' कह कर अभिवादन करते हैं, न उनसे स्नेह-सूचक दो शब्द बोलते हैं और न ही किसी का धन्यवाद करते हैं। जैसे कुछ लोग अपने शब्द बाण द्वारा आघात पहुँचाते हैं वैसे ही ये लोग अपने अवान्छित मौन से दूसरे के मन की खुशी को छीनते हैं। शायद वे सोचते हैं कि किसी का धन्यवाद या शुक्रिया करने से उनका मस्तक झुक जायेगा और वे उसके आभार से दब जायेंगे। ऐसा ही शायद वे लोग भी सोचते हैं जो अपने बुरे कर्मों द्वारा किसी को कष्ट पहुँचाने पर भी 'क्षमा कीजिये' 'माफ फर्माइये' या 'Sorry' शब्द नहीं कहते।

वाणी के रूप

इस प्रकार हमें अपनी वाणी पर बहुत ही ध्यान देने की जरूरत है। यही वाणी अश्रुगैस का रूप धारण कर दूसरों के नेत्रों में आँसू भी ला सकती है और हँसाने वाली गैस बन कर दूसरों को हँसा भी सकती है। यही हमारे या अन्य के कार्य में रुकावट डालने वाला पत्थर भी बन सकती है और यही कारोबार रूपी मशीन में तेल का काम करके उसे सुचारू भी बना सकती है। यही शब्द बन्दूक की गोलियों की तरह घातक भी हो सकते हैं और यही शब्द घायल मन के लिए संजीवनी बूटी का अथवा मरहम-पट्टी का भी काम कर सकते हैं। शब्दों का धनी बनकर, अपना वचन निभाकर दूसरों को प्रसन्न भी किया जा सकता है और शब्दों की कंजूसी करके दूसरों का दिल तोड़ा भी जा सकता है। यही वाणी दो-धारी तलवार भी हो सकती है और यही ढाल भी। यही कैंची का काम भी कर सकती है अर्थात् दो मनुष्यों के मन को कुतर कर अलग कर सकती है और यही सूई का काम भी कर सकती है अर्थात् उनको जोड़ भी सकती है। यह आक से भी अधिक कड़वी हो सकती है और सबसे अधिक मीठी भी। यही वाणी अमृतमयी भी हो सकती है और यही विष-भरी भी हो सकती है। मनुष्य की ढाई इंच की जिह्वा तख्त पर चढ़ाने वाली भी हो सकती है और तख्ते पर भी। इसी मुख से निकले हुए शब्द रत्नसम भी हो सकते हैं और पत्थर समान भी। यही वाणी घातक भी हो सकती है और तारक भी। हमें चाहिए कि हम अमृत-वर्षा अथवा रत्न-वर्षा करें। जैसे हम यह सोचते हैं कि हमारे मुख से किसी को दुर्गन्ध न आये वैसे ही हमें यह खयाल भी रखना चाहिए कि हमारी वाणी से भी किसी को बदबू न आये। ■■■

आओ! धराशायी करें रावण

■■■ रश्मि अग्रवाल, सिमडेगा

इतने रावण जला चुके हम एक और जल जाएगा,
लेकिन क्या रावण से अपना पीछा छूट जाएगा ?
पुतलों से रावण जलता, है सिर्फ यह हमारा भ्रम,
धन और समय की बरबादी का होता व्यर्थ उपक्रम।।

अन्तर्मन में व्याप्त बुराइयों का प्रतीक है रावण,
हर मन में छुपकर बैठा है, अहंकार का रावण।
वर्तमान का दशानन यानि काम, क्रोध, अनाचार,
विजयादशमी पर करना होगा इन सबका संहार।।

मानवता की रक्षा करने आते स्वयं शिव राम हैं,
आसुरी वृत्ति का जग से करते काम तमाम हैं।
शिव के सच्चे ज्ञान-दान से आती जीवन में खुशहाली,
विजय सदाचार की होती, मिट जाती पीड़ा, बदहाली।।

संदेश यही लेकर आता, पावन, मनभावन दशहरा,
विजयादशमी पर करें धराशायी अब असली चेहरा।
आओ अब एक नया उत्सव मिलकर मनाएँ हम,
खुद को रावण से बचाकर, रामराज्य सजाएँ हम।।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

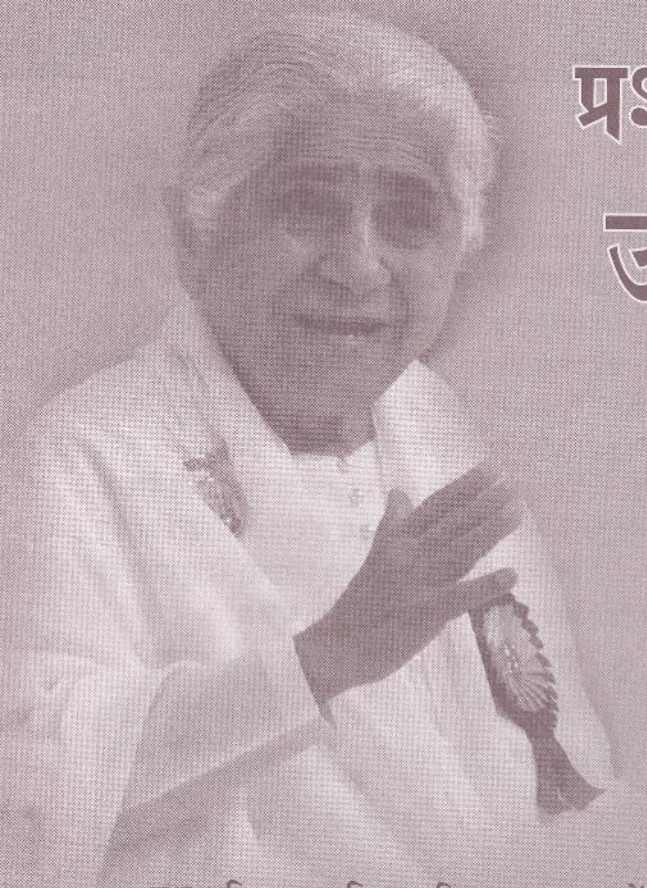

प्रश्नः- दिल, मन, चित्त, वृत्ति इनका आपस में क्या कनेक्शन है?

उत्तरः- दिल में जरा भी कोई फीलिंग होगी तो चित्त बिचारा... हो जाता है। अन्दर जिस बात की स्मृति होती है वो वृत्ति में आती है। वृत्ति से दृष्टि काम करती है। तो स्मृति, वृत्ति, दृष्टि तीनों ही एक हैं। भावना का कनेक्शन स्मृति के साथ है। स्मृति का कनेक्शन वृत्ति के साथ, वृत्ति का दृष्टि से। पढ़ाई बड़ी ऊंची है। यह पढ़ाई समय की वैल्यू बताती है। समय एक सेकेण्ड भी वेस्ट नहीं करेंगे, मेरे को कुछ जरूरत ही नहीं है। दुनिया में लाखों मनुष्य हैं, एक-एक के पास अनेक बातें हैं। लेकिन मेरे पास तो समय को सफल करने का यही समय है इसलिए और बातों में जाने का मेरे पास समय ही नहीं है। यह मेरी बात कैच कर रहे हो ना। इसे प्रैक्टिकल लाइफ में लाना है।

प्रश्न- भक्ति में कहते हैं कि यह संसार स्वप्नवत् है, ज्ञान में इसका भावार्थ क्या है?

उत्तर- बाबा ने मुरली में कहा है कि जो कुछ बीता वो स्वप्न के समान ही है। सारा चक्र बाबा याद कर रहे थे कि कैसे सारा चक्र बीत चुका और बस स्वप्न हो गया। सारे चक्र को इस तरह से याद करना सहज है कि स्वप्न है। परन्तु आज सवेरे किसी ने कुछ कहा, कल किसी ने कुछ बोला, वो जो दिल को तीर लग जाता है, उस बात को फिर बिल्कुल समेट करके यही सोचें कि यह भी एक स्वप्न था। उसके लिए बाबा पुरुषार्थ बता रहे हैं कि बस आगे बढ़ते चलो। आजकल जब माइन्डफुलनेस की बातें चलती हैं, तो कहते हैं कि जो अब की बात है, उस पर फोकस करो, और बातें छोड़ दो। बाबा भी हमें बता रहे हैं कि बस, अब जो चल रहा है उसी पर ध्यान दो और आगे जिस राह तक पहुँचना है, जिस मंजिल तक पहुँचना है, उसको याद करो। बाकी कल की बात, आज सवेरे की बात को भी स्वप्न मानकर उसको भूल जाओ।

प्रश्न- दादी जी, आप ऐसा क्या करते हो जो आपको सब बातें भूल जाती हैं, स्वप्न जैसे हो जाती हैं?

उत्तर- बाबा चला रहा है, हम खुशी से चल रहे हैं। हमारी बुद्धि कभी भी हद में अटकती, लटकती, चटकती नहीं है। यही तीन बातें होती हैं या तो कहाँ अटक जाते हैं, कहाँ चटक जाते हैं, कहाँ लटक जाते हैं। बुद्धि को ऐसे रखना ही नहीं है। बाबा ने ज्ञान ऐसा दिया है, कहता है, मेरे बच्चे मुझे जानते हैं कि बाबा क्या चाहता है, क्या बताता है। सभी जानते हैं तब तो मनमत, परमत से फ्री हैं। श्रीमत सत्गुरु की है। स्मृति सदा यह है, मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, तो खुशी होती है। यह जो समय है ना, पुरुषार्थ के लिए बहुत अच्छा है। यहाँ बाबा का खाते हैं, पहनते भी हैं, स्वर्ग में थोड़े ही सफेद कपड़े पहनेंगे। इस समय की ड्रेस में अलग प्रकार की खुशी है। तन भी ठीक चल रहा है, मन भी ठीक है, धन तो हमको चाहिए नहीं। बाबा के घर का खाते हैं।

प्रश्न- देह से न्यारे रहने के क्या फायदे हैं?

उत्तर- मैं आत्मा हूँ, शरीर से न्यारी हूँ, बाबा की प्यारी हूँ। जितना देह से न्यारे होंगे उतना देहधारियों के लगाव में नहीं होंगे। बाबा ने कहा, कहीं भी किसी के साथ भी लगाव-झुकाव न हो। नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा यानि यह स्मृति में रहे कि मैं आत्मा, मेरा मीठा-प्यारा बाबा। अगर कोई मुश्किल बात भी है तो मुस्कराने से वो भी हट जाती है। एक बारी बाबा को पूछा था कि आपसे जब दृष्टि लेते हैं तो लाइट क्यों मिलती है, माइट क्यों मिलती है? बाबा सिर्फ मुस्कराया, तब से जब भी बाबा को देखते हैं, याद करते हैं, लाइट हो जाते हैं, माइट आ जाती है। यहाँ अभी का जो पार्ट है वो पूरे 84 जन्मों से बहुत अच्छा है इसलिए मैं सतयुग में नहीं जाना चाहती हूँ, भले जायेंगे तो देखा जायेगा। बाबा का बनने का जन्मदिन मनाना चाहिए। फिर भी कहेंगे, जो कुछ कराने वाला है वो करा रहा है, हम हाज़िर हैं। अगर आज भी बाबा खींचे ना तो मैं रेडी हूँ। शान्ति की शक्ति कैसे जमा की जाए? बोलने की शक्ति बहुतों में है, शान्त रहने की शक्ति बहुत कम है क्योंकि शान्ति में सच्चाई है, प्रेम है, धीरज है तो नम्रता भाव भी है। जरा-सा भी अभिमान नहीं है। भगवान ने मुझे अपना बनाके इतने वर्षों से यहाँ बिठाके रखा है। बाबा की सेवा में अपनी लाइफ को अच्छा सफल किया है। अच्छी बात यह है कि जो बात बीती, लगाओ बिन्दी। यह शान्ति से रहने, प्रेम से चलने की युक्ति है। शान्ति से रहने की शक्ति जमा करो। अन्दर से शान्त रहो। आवाज बिल्कुल न निकले। मेरी पलकों में मेरा बाबा बैठा है, यह अनुभव होता है। दिखाई पड़े कि यह त्यागी है, तपस्वी है, सेवाधारी है।

प्रश्न- दादी जी, आपने साकार और अव्यक्त बापदादा से बहुत पालना ली है, अब आपका फर्ज क्या कहता है?

उत्तर- बाबा का एक-एक शब्द लाइट दे रहा है। लाइट के बिगर माइट नहीं मिलती। जितना न्यारा रहो उतना अच्छा। कारोबार पूरा हुआ फिर अशरीरी बन जाओ तो हल्के रहेंगे। हम सबका रूहानी प्यार आपस में ऐसा हो जिसमें जरा भी लोभ-मोह न हो। आज नहीं तो कल, हम रेडी हैं। अगर बाबा आत्मा को शरीर से खींच लेवे तो मैं रेडी हूँ। अगर यहीं बिठा देवे तो भी ठीक है, बाबा के साथ सेवा करती रहूँगी। जो दिल की बात है, सच बता रही हूँ। साकार में बाबा ने सेवा की, पर अव्यक्त रूप से भी गुलजार दादी द्वारा कितनी सेवा की है। हमने साकार पालना ली फिर अव्यक्त बाबा की पालना ली। अभी हमारा फर्ज़ कहता है, जो पालना हमने ली है वो पालना सबको मिले। वह परमात्मा है, हम आत्मा हैं, फर्क बहुत बड़ा है। मैं आत्मा बच्चा हूँ, वो सर्व का बाप है, पर सिर्फ बाप नहीं है, माता भी है, शिक्षक भी है, सखा भी है, सत्गुरु भी है। यह बाबा में विशेषता है। बाबा से सब सम्बन्ध ऐसे हों जो पूरे चक्र में अच्छा पार्ट हो। आप सभी भी संगमयुग पर परमात्मा बाप से सब सम्बन्ध की शक्ति ले लो, तभी सारे विश्व की शक्तिशाली सेवा कर सकते हैं। भगवान मेरा बाप है यानि मैं भाग्यवान हूँ। परमात्मा बाप तेरी लीला अपरम्पार है। बाबा हमारा अन्तर्यामी है माना हमारे अन्दर को जानने वाला। कोई मनुष्य आत्मा नहीं जानती, एक वो जानता है। तो हरेक को यह निश्चय भी है, नशा भी है और हरेक निश्चिंत भी है। सब बेफिकर बादशाह हैं या किसी को कोई फिकर है? दुनिया में कोई ऐसा नहीं होगा जो कहे, मैं बेफिकर बादशाह हूँ, नहीं। लेकिन हम सब बेफिकर बादशाह हैं क्योंकि विदेही रहना और ट्रस्टी रहना, यह बाबा ने सिखाया है।

प्रश्न- दादी जी, ऐसे कौन-से प्रश्न हैं जिनका कोई उत्तर नहीं होता है?

उत्तर- कोई कहते हैं, क्यों, क्या... अब ऐसे प्रश्नों का कोई उत्तर ही नहीं है क्योंकि जो बना हुआ है वो हुआ और जो होने वाला है वही होगा परन्तु हमको क्या करने का है? बाबा ने ड्रामा की नॉलेज ऐसी दी है जैसे ड्रा मा जैसे ड्रीम हो गया। जैसे साकार ब्रह्माबाबा ने अपना जीवन शिवबाबा को दे दिया उसी तरह से मैंने भी बाबा को अपना यह जीवन दे दिया तो बाबा, मुझे अपना बनाके दुनिया को ऐसा मुखड़ा दिखाने के लिए सेवा पर भेजता रहता है सारे विश्व में। हरेक आत्मा का विशेष पार्ट है जो आदि से ले करके अभी तक बजा रहे हैं। आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान परमात्मा ने ऐसा दिया है तो क्यों-क्या का आवाज कभी नहीं निकलता है। ■■■

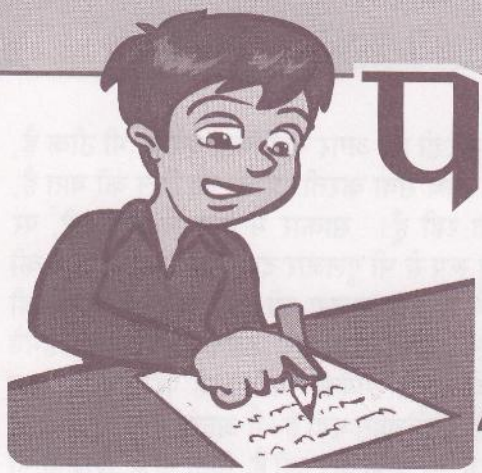

पत्र सम्पादक के नाम

मैं सन् 2000 से ज्ञानामृत का नियमित पाठक हूँ। बहुत अनुभव से कहता हूँ कि शिवबाबा की मुरली के बाद आध्यात्मिक ज्ञान की गहराई को समझने में और अनुभवों के विकास में, यज्ञ की महान आत्माओं की शिक्षाओं के समान ही ज्ञानामृत का भी मेरे जीवन में अमूल्य योगदान रहा है। ज्ञानामृत के मेंबर बनाने की सेवा करते हुए भी बहुत-सी आत्माओं के अनुभव मिले। इतने सालों में स्पष्ट रूप से अनुभव किया है कि ज्ञानामृत के ज्ञान-प्रवाह में कभी ठहराव नहीं आया। हर बार, पिछले अनुभव से अगले पायदान की यात्रा दिखाई दी है और पिछले कुछ वर्षों से यह यात्रा अब विराट रूप लेती हुई दिखाई दे रही है। उदाहरणार्थ, पिछली कई लेख-मालाओं में आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जिस प्रकार सामाजिक विषयों की विवेचना की गई है उससे यह स्पष्ट हो रहा है कि ज्ञानामृत अब सीधे तौर पर इस ईश्वरीय ज्ञान की शक्ति का प्रयोग सामाजिक समस्याओं के निराकरण में कर रही है। जैसे कि नारी सम्मान और उत्थान पर प्रकाशित लेख, मूल्य शिक्षा के महत्व पर प्रकाशित लेख, व्यसनमुक्ति पर लेख और राजनीति और मुकदमेबाजी जैसे सांसारिक समझे जाने वाले विषयों पर लेख। नैतिक एवं आध्यात्मिक विषयों पर कितना कुछ पत्रिका में प्रकाशित किया जा चुका है, उसके बारे में कहने की जरूरत नहीं है। एक भी विषय चाहे गुणों के उत्थान का हो या अवगुणों के शमन का हो, अछूता नहीं रहा है। इसके लिए परमात्मा शिव का ज्ञानामृत रूपी अमृत कलश हम आत्माओं तक पहुंचाने के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद। सारे ज्ञानामृत संगठन को दिल की दुआएँ और आभार। जुलाई अंक का संपादकीय 'गुणों की गहराई' हम सभी के अंतर्मन को झिंझोड़ देने की क्षमता रखता है कि गुण कोई ट्रिक नहीं है, कैरेक्टर है। इन्हें काम निकालने की युक्ति या अच्छा कहलाने के लिए अभिनय के रूप में नहीं अपनाया जा सकता बल्कि आचरण की श्रेष्ठता के रूप में ही विकसित किया जा सकता है, तभी इनकी वास्तविक महत्ता प्रकट होती है। इसलिए हम सभी आध्यात्मिक अभियंता बनें, अभिनेता नहीं। इतनी सुंदर व सटीक शिक्षाओं के लिए निमित्त लेखनी को सादर वंदन व नमन।

ब्र. कु. विपिन गुप्ता, टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)

अगस्त, 2019 का दादी प्रकाशमणि जी के आभामंडल से युक्त ज्ञानामृत अंक, जीवन की वास्तविकता से सराबोर है। संपादकीय 'नाराजगी और ताजगी' में असंतुष्टता के कारण शत प्रतिशत सत्य हैं। आजकल हर कोई अपने दृष्टिकोण के सीमित दायरे में ही सोचने लगा है जिससे रिश्तों में दरारें आने लगी हैं। 'सद्गुण ही संपदा हैं' लेख में ब्र.कु. उर्मिला दीदी जी की हमेशा की तरह कहानीयुक्त विचारधारा, मन को छू गई। जो भी हमारे पास संपदा है, उसमें करुणा के भाव होने चाहिएँ अन्यथा फिसल जाएगी। लेख के भावों ने भावनाओं में बहा दिया। कुल मिलाकर श्रावण मास में आया हुआ दादीजी की पुण्यतिथि का अंक पथ प्रदर्शक है।

ब्र.कु. बाबूभाई, चिटगुप्पा, बीदर (कर्नाटक)

मैं ज्ञानामृत का नियमित पाठक हूँ। जुलाई, 2019 का अंक मैंने एक ही बैठक में पूरा पढ़ दिया। 'गुणों की गहराई', 'एक स्वच्छता यह भी', 'सहज राजयोग', 'विचार परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' लेख बहुत पसंद आये। ब्र.कु.शिवानी दीदी की कलम बहुत पसंद करता हूँ।

नरसिंह परमार, मानसा (गुजरात)

1.फतेहपुर- केन्द्रीय ग्राम विकास राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.नीरू बहन। **2.दिल्ली (मण्डावली)-** दिल्ली के उपमुख्यमंत्री भ्राता मनीष सिसोदिया को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुनिता बहन। **3.दिल्ली (दिलशाद गार्डन)-** दिल्ली विधानसभाध्यक्ष भ्राता रामनिवास गोयल को राखी बांधते हुए ब्र.कु.गीता बहन। **4.बरेली (बन्नुवाल)-** केन्द्रीय राज्यमंत्री भ्राता सन्तोष गंगवार को राखी बांधते हुए ब्र.कु.रजनी बहन। **5.उन्नाव-** उ.प्र.विधानसभाध्यक्ष भ्राता हृदय नारायण दीक्षित को राखी बांधते हुए ब्र.कु.कुसुम बहन। **6.मथुरा (गोपालपुरा)-** उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री भ्राता लक्ष्मीनारायण चौधरी को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.कृष्णा बहन। **7.अल्लापुर (प्रयागराज)-** उ.प्र.के.कैबिनेट मंत्री भ्राता नन्दगोपाल नन्दी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुषमा बहन। **8.मुरादाबाद-** उ.प्र.के पंचायती राज्यमंत्री भ्राता भूपिन्द्र सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.आशा बहन। **9.अलीगढ़ (सत्यधाम)-** उ.प्र.के.शिक्षामन्त्री भ्राता संदीप सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.कमलेश बहन। **10.पोखरा-** गण्डकी प्रदेश उप-सभामुख बहन सृजना शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.प्रणीता बहन। **11.चम्पावत-** सांसद भ्राता अजय टमटा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.ज्योति बहन। **12.गंगोह-** सांसद भ्राता प्रदीप चौधरी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.प्रीति बहन।

जो सोचें वह हो जाए - कैसे?

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

एक मटका मिट्टी और पानी के सहयोग से बनता है। यदि इस पर पानी की बूँदें पड़ जाएँ तो यह गल सकता है और यदि पानी का तेज बहाव आए तो गलने के साथ-साथ बह भी सकता है परन्तु जब इस कच्चे मटके को अग्नि का संग देकर पका दिया जाता है तो यह पानी की बूँदों के प्रहार से और पानी के बहाव से तो सुरक्षित हो ही जाता है, साथ-साथ पानी को अपने अन्दर शरण देने वाला बन जाता है।

कच्चे और पक्के विचार

जैसे कच्चे और पके मटके में अन्तर होता है, उसी प्रकार मानव के कच्चे और पक्के विचारों में अन्तर होता है। जब कोई मानव पहले-पहले यह विचार करता है कि मुझे हर परिस्थिति में शान्त रहना है तब मानो वह शान्ति का कच्चा घड़ा तैयार करता है। लेकिन अशान्ति, विरोध, प्रतिकूलता, नकारात्मकता की बूँदें पड़ते ही विचारों का यह कच्चा घड़ा भी गलने और बहने लगता है। तब वह सोचता है, मैं तो शान्त रहना चाहता हूँ, शान्ति मुझे प्रिय है, मैं किसी को अशान्त नहीं करता हूँ परन्तु फिर भी मेरा मन अशान्त क्यों हो जाता है? कारण यह है कि संकल्प रूपी घड़े को पकाया नहीं गया है। इसे पकाने के लिए चाहिए ईश्वरीय संग रूपी अग्नि जिसे दूसरे शब्दों में योगाग्नि कहा जाता है। जब हम योगबल से अपने विचारों को फौलादी स्वरूप दे देते हैं तब मानो वे पक जाते हैं और फिर कैसी भी विपरीत बात आने पर भी अपने स्वरूप में अडिग रह पाते हैं।

परमात्मा पिता के संग का बल

बात केवल शान्ति के संकल्प की नहीं है, कोई भी उत्तम विचार पहले योगाग्नि से तपाना पड़ता है तब वह दृढ़ हो पाता है। योगाग्नि में तपाने का अर्थ है, परमात्मा पिता के मानसिक संग से उत्पन्न लगन, स्नेह, दृढ़ता, सफलता, विजय और समानता के विश्वास में संकल्प को रंगना। ऐसा संकल्प जब बार-बार परमात्मा पिता के संग का बल पाता है तो वो उन्हीं के समान दृढ़ और सर्व शक्तिवान बन जाता है। अत: हम शान्ति, प्रेम, पवित्रता, त्याग, दया, उदारता, करुणा... के संकल्पों को तो पकड़ें परन्तु साथ-साथ परमात्मा पिता के संग की मजबूती भी उन्हें दें।

भगवान कहते हैं, किसी भी संकल्प रूपी बीज को फलीभूत बनाने का साधन एक ही है, वह है, 'सदा बीज रूप बाप से हर समय सर्व शक्तियों का बल उस बीज में भरते रहना।' बीज रूप द्वारा आपके संकल्प रूपी बीज सहज और स्वत: वृद्धि को पाते फलीभूत हो जायेंगे। बीज रूप से निरन्तर कनेक्शन न होने के कारण अन्य आत्माओं को वा साधनों को वृद्धि की विधि बना देते हैं। इस कारण ऐसे करें, वैसे करें, इस जैसा करें, इस विस्तार में समय और मेहनत ज्यादा लगाते हैं।

चित्त को चैन आए कैसे?

आज हम देख रहे हैं कि मानव आत्माओं की अत्याचार, अनाचार, दुराचार, अन्याय, पक्षपात, प्रतिशोध, ईर्ष्या आदि की आग्नेय वृत्तियों से यह संसार अदृश्य रूप से सुलग रहा है। एक छोटा बच्चा भी जन्म के कुछ समय बाद इस सुलगाहट का शिकार हो जाता है। घर से बाहर गए व्यक्ति की जान और माल, मान और इज्जत खतरे में है तो घर के अन्दर भाव-स्वभाव की टकराहट में उसका चैन टूक-टूक हुआ जा रहा है। मनोरंजन के साधन भी सामाजिक विकृतियों को बढ़ा-चढ़ा कर परोस रहे हैं। उन्हें देखने वाले अपनी विकृतियों का शमन करने के बजाए और अधिक भड़का बैठते हैं। चारों तरफ अपराधिक माहौल है। ऐसे में व्यक्ति जाए तो जाए कहाँ? सुकून पाए कहाँ? चित्त को चैन आए कैसे?

परमपिता परमात्मा शिव, संसार के वर्तमान स्वरूप से पहले से ही भिज्ञ थे इसलिए ऐसा कठिन समय आने से बहुत पहले ही वे अवतरित हो गए और पिछले 83 वर्षों से वृत्ति द्वारा वृत्ति के परिवर्तन की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। जैसे यादगार शास्त्रों में दिखाते हैं कि रावण के अस्त्रों को राम काट गिराता है या आसुरी शक्ति वालों को ईश्वरीय शक्ति वाले निरस्त कर देते हैं ऐसे ही हम यदि ईश्वरीय संग में रंगे हुए संकल्पों की एक बाड़, एक कवच अपने चारों ओर बना लें तो उसमें आसुरी वृत्तियाँ प्रवेश नहीं कर पाएँगी और हम सुरक्षित रह पाएँगे।

क्या अर्थ है वृत्ति का

कई बार यह सवाल उठाया जाता है कि विचार और वृत्ति में क्या अन्तर है। वृत्ति भी विचार ही है परन्तु जब एक ही प्रकार के विचार बार-बार मन में उठते हैं और कर्म में भी आते हैं तो वह व्यक्ति की वृत्ति कहलाती है। जैसे एक शब्द है त्याग और दूसरा शब्द है त्याग-वृत्ति। कई परिस्थितियों में किसी विशेष प्रेरणा के वश, अच्छे संग के प्रभाव से या मजबूरी से हम कई बातों का त्याग कर देते हैं परन्तु उस प्रभाव, परिस्थिति, मजबूरी आदि के पूरा होते ही हम पुन: पुराने ढर्रे पर लौट आते हैं। इसका अर्थ यह है कि हमने अल्पकाल के लिए त्याग किया पर त्याग-वृत्ति नहीं बनाई। वृत्ति का अर्थ है संस्कार। वृत्ति निर्मित होने पर, परिस्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल वह प्रकट होती ही रहती है।

वृत्ति अर्थात् एक ही दिशा में बार-बार उठने वाले दृढ़ विचार। ये विचार वाचा और कर्म में आते-आते हमारे व्यक्तित्व को उसी रूप में ढाल देते हैं और वैसी ही हमारी पहचान बना देते हैं। फिर लोग उसी रूप में हमें पहचानने लगते हैं। जैसे सुनने में आता है कि अमुक व्यक्ति अपराध-वृत्ति का है, अमुक में दया-वृत्ति बहुत है, अमुक की क्रोध-वृत्ति कहीं भी, कभी भी प्रकट हो जाती है आदि-आदि

स्वच्छ मनोवृत्ति

यदि स्वच्छ, उजले कपड़े को मैला पानी छू जाए तो उसकी उज्ज्वलता पर धब्बे नज़र आने लगते हैं। फिर पानी के ही सहयोग से ये धब्बे उतारे जाते हैं। इसी प्रकार स्वच्छ आत्मा को जब मैली मनोवृत्ति छू लेती है तो वह दागदार हो जाती है। इन दागों को उतारने के लिए पुन: मनोवृत्ति का ही सहयोग लेना पड़ता है। विकार रहित मनोवृत्ति बनाकर हम आत्मा पर लगे भूतकाल और वर्तमान काल के धब्बे धो सकते हैं।

विचारों पर पहरा

मनोवृत्ति को ऐसा बनाने के लिए निरन्तर स्वयं पर अटेन्शन की ज़रूरत है। कोई भी नकारात्मक विचार आया और हम रुक गए, उस विचार पर विचार करने के लिए। वह क्यों उठा? किस पुराने संस्कार के प्रभाव से उठा, कितना नुकसान कर गया और भविष्य में न उठे, उसके लिए क्या प्रबन्ध किया जाये आदि-आदि। जैसे घर में यदि कोई ज़हरीला जन्तु सर्प या बिच्छू प्रवेश कर जाए तो हम पूरी जाँच-पड़ताल करते हैं कि कहाँ से प्रवेश किया, कब प्रवेश किया, कितनों ने प्रवेश किया, कौन-से छिद्र या बिल से प्रवेश किया आदि-आदि। इस सारी जाँच-पड़ताल के बाद यदि कोई छिद्र या बिल मिल जाता है तो उसे तुरन्त बन्द करने की कोशिश करते हैं और बार-बार उसकी चेकिंग करते हैं कि दुबारा घुसपैठ न हो जाये। ग़लत विचार, विकारी विचार सर्प की तरह ज़हरीला है, जिसकी समाप्ति का पुख्ता इलाज आवश्यक है। यदि लापरवाही की तो इनकी पूरी फौज इकट्ठी हो जायेगी। जैसे सीमा पर जिस पोस्ट पर थोड़ी चौकसी कम हो और शत्रु को इसकी भनक लग जाये तो जत्थे-के-जत्थे दुश्मनों के घुसपैठ करके तबाही मचा देते हैं, ऐसे ही यदि साधारण चिन्तन है, विचारों पर पहरा नहीं है तो कोई भी कुविचार प्रवेश कर अन्दर भारी तबाही मचा सकता है।

भगवान कहते हैं, 'वृत्ति बहुत तीखे राकेट से भी तेज है। वृत्ति द्वारा वायुमण्डल का परिवर्तन कर सकते हैं। इसके लिए सिर्फ वृत्ति में सर्व के प्रति शुभभावना, शुभकामना हो और बेहद की भावना हो। दूसरे के नकारात्मक भावों को सकारात्मक बनाने की भावना हो। ब्रह्माकुमारीज की स्थापना के समय, यज्ञ में साधनों की कमी नहीं थी परन्तु साथ-साथ बेहद की वैराग्य वृत्ति भी थी। अब भी साधनों का प्रयोग करो लेकिन जितना हो सके उतना वैराग्यवृत्ति के साथ, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। एक तरफ संसार में भ्रष्टाचार-पापाचार की अग्नि है, दूसरी तरफ आप बच्चों की शक्तिशाली योग की अग्नि आवश्यक है। आपकी योग अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी।'

'वाणी और वृत्ति से साथ-साथ सेवा में लगे रहें। आपके बोल, कर्म, वृत्ति से सबको हल्केपन की अनुभूति हो। इसमें सहनशक्ति को धारण करने की आवश्यकता है। जो भी आवे उसे कुछ ईश्वरीय तोहफा दें, वह खाली हाथ नहीं जाए। आप मास्टर स्नेह के सागर हो, सारी दुनिया आप पर क्रोध करे पर आप दुनिया की परवाह मत करो, बेपरवाह बादशाह बनो, तब आपकी श्रेष्ठ वृत्ति से शक्तिशाली वायुमण्डल बनेगा। जैसे आजकल साइन्स के साधनों से रद्दी माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं, आपकी श्रेष्ठ वृत्ति भी व्यर्थ को समर्थ में बदल दे।' ■■■

1.दिल्ली (मजलिस पार्क)- पार्षद भ्राता नवीन त्यागी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.राजकुमारी बहन। **2.दिल्ली (पश्चिम विहार)**- पार्षद भ्राता विनीत वोहरा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुषमा बहन। **3.दिल्ली (जहाँगीरपुरी)**- पार्षद भ्राता अजय शर्मा को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मन्जू बहन। **4.दिल्ली (लाजपत नगर)**- पार्षद भ्राता सुनील सहदेव को राखी बांधते हुए ब्र.कु.चन्द्र बहन। **5.दिल्ली (राजौरी गार्डन)**- पार्षद बहन वीना विरमानी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.शक्ति बहन। **6.खुर्जा**- चेयरमैन भ्राता रफीक फद्दा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.नीलम बहन। **7.आगरा (शमसाबाद)**- सी.ओ.भ्राता प्रभातकुमार को राखी बांधते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन। **8.ऋषिकेश**- मुख्य अभियन्ता भ्राता ए.एस.राठौर को राखी बांधते हुए ब्र.कु.आरती बहन। **9.रामपुर मनिहारन**- सामुदायिक केन्द्र के अधीक्षक डॉ.सर्वेश को राखी बांधते हुए ब्र.कु.संतोष बहन। **10. आगरा :** जिला अधिकारी भ्राता एन.जी. रवि कुमार को राखी बांधती हुई ब्र.कु. मधु बहन। **11. कुशीनगर :** जिला अधिकारी भ्राता अनिल कुमार सिंह को राखी बांधती हुई ब्र.कु. मीरा बहन। **12. फर्रुखाबाद :** पुलिस अधीक्षक भ्राता अनिल कुमार मिश्रा को राखी बांधती हुई ब्र.कु. पूनम बहन।

1.दिल्ली (किंग्जवे कैम्प)- दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष भ्राता रामनिवास गोयल को राखी बांधते हुए ब्र.कु.साधना बहन। **2.दिल्ली (छतरपुर)-** विधायक भ्राता करतार सिंह कंवर को राखी बांधते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन। **3.दिल्ली (प्रगति विहार)-** विधायक भ्राता नन्दकिशोर गुर्जर को राखी बांधते हुए ब्र.कु.रेनू बहन। **4.दिल्ली (महरौली)-** विधायक भ्राता नरेश यादव को राखी बांधते हुए ब्र.कु.अनीता बहन। **5.फर्रुखाबाद (ओम निवास)-** विधायक भ्राता कुँवर मानवेन्द्र प्रताप सिंह को राखी बाँधते हुए ब्र.कु.शोभा बहन। **6.रुद्रपुर-** ब्र.कु.सूर्यमुखी बहन से राखी बंधवाते हुए विधायक भ्राता राजकुमार ठुकराल। **7.कानपुर (किदवई नगर)-** विधायक भ्राता महिन्द्र त्रिवेदी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.आरती बहन। **8.दिल्ली (बृजपुरी)-** विधायक भ्राता दत्त शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.कविता बहन। **9.मिश्रिख तीर्थ-** विधायक भ्राता रामकृष्ण भार्गव को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सरस्वती बहन। **10.दिबियापुर-** विधायक भ्राता लखनसिंह वर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सरिता बहन। **11.मोदीनगर-** विधायिका डॉ.मंजू शिवाच को आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.नीतू बहन। **12.पुखरायाँ-** विधायक भ्राता विनोद जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.ममता बहन।

ज्ञान-दीप जगाना ही सच्ची दीवाली है

दीपावली भारत का एक ऐसा विशेष त्योहार है जिसे भारत के प्राय: सभी लोग हर्षोल्लास से मनाते हैं। इस दिन हर छोटे और बड़े, ग़रीब और अमीर तथा ग्रामीण और नागरिक के चेहरे पर खुशी के चिह्न दिखाई देते हैं। तब रात्रि को दीपों की जगमगाहट का अतीव सुन्दर दृश्य देखते ही बनता है।

इस त्योहार के प्रारम्भ के बारे में किंवदन्तियाँ

इस त्योहार का प्रारम्भ कब और कैसे हुआ? इसके बारे में अनेक किंवदन्तियाँ अथवा पौराणिक कथायें प्रचलित हैं। एक आख्यान यह है कि चिरातीत काल में एक समय ऐसा था जब नरकासुर ने सारी सृष्टि पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। भगवान् ने नरकासुर का नाश कर सृष्टि को उसके भय से मुक्त किया और देवताओं को नरकासुर के बन्धन से छुड़ाया। अत: दीवाली से एक दिवस पहले की रात्रि को 'नरक-चतुर्दशी' मनाई जाती है जिसे 'छोटी दीवाली' भी कहते हैं और उसके अगले ही दिन अर्थात् कार्तिक की अमावस्या को बड़ी दीपावली महोत्सव होता है।

दूसरी कथा यह है कि ''दैत्य राजा बलि ने सारे भूमण्डल पर अपना एकछत्र राज्य जमा लिया था। तब पृथ्वी पर आसुरीयता फैल रही थी और धर्म-निष्ठा नष्ट प्राय: हो चली थी। तब राजा बलि ने श्री लक्ष्मी को सभी देवी-देवताओं सहित अपने कारागार का बन्दी बना लिया था। उस समय भगवान् ने राजा बलि की आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त करके श्री लक्ष्मी व सभी देवी-देवताओं को कारागार की यातनाओं से छुड़ाया।'' उसी के उपलक्ष्य में तब से हर वर्ष इस रात्रि को दीपोत्सव किया जाता है और घरों के द्वार खोलकर श्री लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है।

इन आख्यानों का अर्थ-बोध

ऊपर जिन दो आख्यानों अथवा कथाओं का उल्लेख किया गया है, उनका अक्षरश: अर्थ तो अग्राह्य ही होगा क्योंकि किसी एक व्यक्ति द्वारा श्री लक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओं को अथवा सारी सृष्टि को बन्दी बना देना तो सम्भव ही नहीं है। अत: वास्तव में इन दोनों कथाओं में एक बहुत महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक वृत्तान्त को लाक्षणिक भाषा में एक रूपक देकर वर्णन किया गया है। ज्ञान-दृष्टि के अनुसार नरकासुर माया अर्थात् मनोविकारों ही का पर्यायवाची है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को गीता में 'नरक का द्वार' भी कहा गया है और 'आसुरी लक्षण' भी माना गया है। चूंकि इन विकारों अथवा आसुरी लक्षणों पर विजय प्राप्त करना बहुत कठिन है, इसलिए इन्हीं का नाम इस रूपक में बलि है। गीता में माया ही को दुस्तर अर्थात् 'बलि' कहा गया है। विश्व के इतिहास में कलियुग के अन्त का समय ऐसा समय है जब इन्हीं विकारों का सब नर-नारियों के मन पर राज्य होता है। तब सारी सृष्टि नर्क बनी होती है। इसलिए कहा जा सकता है कि तब राजा बलि अथवा नरकासुर का ही सृष्टि पर आधिपत्य था। सतयुग में भारत स्वर्ग भूमि था और यहाँ के वासी देवी-देवता थे परन्तु जन्म-मरण के चक्र में आते हुए वे कलियुग के अन्त में सृष्टि को नर्क बनाने वाले और नर-नारी को असुर बनाने वाले इन बलि (विकारों) के आधीन हो गये थे। तब कलियुग के अन्त में ईश्वरीय ज्ञान देकर परमपिता परमात्मा ने इन विकारों रूपी नरकासुर का अन्त किया और सतयुग में जो मानवी आत्मायें श्री लक्ष्मी अथवा अन्य देवी-देवता नाम से अभिज्ञात थे, उन्हें इस नरकासुर के बन्धन से मुक्त कराया। इसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त की याद में आज भी हर वर्ष कार्तिक के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को छोटी दीवाली मनाई जाती है और फिर इसके बाद श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के स्वतन्त्रता पूर्वक राज्य के शुरू होने अथवा सतयुग के शुरू होने की खुशी में अगले ही दिन अमावस्या की रात को बड़ी दीवाली मनाई जाती है।

देवत्व की आसुरीयता पर विजय

कई लोग ऐसा मानते हैं कि दीवाली का त्योहार रावण पर राम की विजय के बाद मर्यादा-युक्त रामराज्य प्रारम्भ होने का स्मरणोत्सव है। वास्तव में इसका भी वही भाव है जो कि पूर्वोक्त दो आख्यानों का है क्योंकि रावण आसुरी शक्ति और राम ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक है।

ज्ञान-दीप जगाए बिना दीवाली निरर्थक

छोटी दीपावली, बड़ी दीपावली और इन दोनों से पहले की अन्धेरी रात्रि (धन-तेरस) पर जो दीप-दान करता है वह अकाल मृत्यु से बच जाता है। दीप-दान करने का भाव भी ज्ञान-दान करना है। दीपावली के इस ज्ञान पक्ष की उपेक्षा का ही यह परिणाम है कि हर वर्ष मिट्टी के दीप अथवा आधुनिक परिपाटी के अनुसार मोमबत्तियों और बिजली से रोशनी कर लक्ष्मी जी का आह्वान करने के बाद भी आज भारत देश में लक्ष्मी जी का स्थाई वास नहीं। यहाँ भ्रष्टाचार ही राजा बलि अथवा नरकासुर बनकर सब पर अपना आधिपत्य जमाये हुए है। इसके परिणामस्वरूप भारत के आधे से अधिक लोग निर्धनता के स्तर से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। लक्ष्मी जी को तो 'पद्मा', 'कमला' इत्यादि नामों से भी याद किया जाता है, क्योंकि वे कमल-पुष्प-निवासिनी मानी गई हैं। परन्तु आज हमारे गृहस्थों के घर कमल समान पवित्र ही नहीं बने और उनके अन्तर की ज्योति ही नहीं जगी तब भला विषय विकारों से नर्क बने घर में लक्ष्मी जी का शुभ आगमन कैसे हो सकता है?

दीपावली 'महारात्रि' कैसे है?

यों आज भी साधक लोग दीपोत्सव की रात्रि को साधना के दृष्टिकोण से 'महारात्रि' मानते हैं। उनकी यह धारणा है कि इस रात्रि को मन्त्र की सिद्धि की जा सकती है। अत: वे इस रात को जागकर अपनी मन्त्र साधना करते हैं। यह मान्यता भी कलियुग के अन्त की घोर अज्ञानरात्रि से सम्बन्धित है। कलियुग के इस तमोप्रधान अन्तिम चरण में जो कोई भी परमात्मा द्वारा दी हुई मार्ग प्रदर्शना (मन्त्रणा) के अनुसार चलता है उसको सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। भक्त लोग यह भी मानते हैं कि जो इस रात्रि को आलस्य के वश सोया रहता है, वह श्री लक्ष्मी के आशीर्वाद से वंचित रहता है। परन्तु वास्तव में यह बात भी आध्यात्मिक जागृति के बारे में कही गई है। कलियुग के अन्तिम चरण में जो व्यक्ति अज्ञान-निद्रा में सोये रहते हैं, वे आने वाले सतयुगी श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के सुख पूर्ण स्वराज्य में सौभाग्य का स्थान प्राप्त नहीं कर सकते। इतना ही नहीं, ईश्वरीय ज्ञान लेने के अतिरिक्त संगम युग में ईश्वरीय ज्ञान-दान देने का भी बहुत महत्त्व माना गया है। इसलिए भी दीपावली की महारात्रि को दीपदान करने का भी बड़ा महत्त्व है। इस दिन कुछ लोग तो दीपकों को अपने मस्तक पर घुमाकर दान कर देते हैं। वे समझते हैं कि इससे सर्व अनिष्ट से निवृत्ति होती है। स्पष्ट है कि सर्व अनिष्ट निवृत्ति तो ज्ञान द्वारा आत्मा का दीप जगाने से ही हो सकती है। संगम युग में मनुष्यात्माओं का जीवन-दीप अलौकिक होने के फलस्वरूप ही नर श्री नारायण और नारी श्री लक्ष्मी पद को अथवा देवता या देवी पद को प्राप्त करते हैं। तभी सतयुग का आरम्भ होता है। इसी के उप-लक्ष्य में दीवाली के अवसर पर लोग अपने घरों पर पताका फहराते हैं और यह भी कहा जाता है कि इसी दिन राजा पृथु ने पृथ्वी पर अपना चक्रवर्ती राज्य प्रारम्भ किया था और यह पृथ्वी हरी-भरी तथा सुख समृद्धि पूर्ण हुई थी जबकि इससे पहले यहाँ पर दरिद्रता थी।

बड़ी दीपावली सतयुगी श्री नारायण-राज्य की यादगार

दीवाली के अवसर पर लोग प्राय: नये कपड़े पहनते हैं, कुछ नये बरतन खरीदते हैं और पुराने बही खाते अथवा आय-व्यय पंजिकाओं को बन्द कर के नये बही खाते शुरू करते हैं। ये सब नई सृष्टि में सुख-शान्ति-पूर्ण नये युग के आरम्भ के सूचक हैं।

अब फिर से कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम का समय चल रहा है जबकि हमें अपने पुराने हिसाब-किताब को समेटने का पुरुषार्थ करना चाहिए और ईश्वरीय ज्ञान तथा योग के द्वारा घर-घर में ज्ञान-दीप जगाने की सेवा करनी चाहिए क्योंकि सर्व अनिष्ट से निवृत्ति का मात्र यही एक साधन है। इससे ही भारत में दरिद्रता समाप्त होगी और यहाँ सुख-शान्ति के सतयुग के दिन आयेंगे। दीपावली को सही रीति से मनाने का तरीका यही है। ■■■

1.नोयडा (सेक्टर-26)- 'फास्ट फॉरवर्ड टू न्यू पोसिबिलिटीज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सुदेश बहन, ब्र.कु.रमा बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.यशवन्त भाई तथा आई.टी.लीडर्स। **2.दिल्ली (पीतमपुरा)**- मीडिया इंस्टिट्यूट में राखी बांधने के बाद प्राचार्य बहन सुमित्रा जी, ब्र.कु.कनिका बहन, ब्र.कु.सुरेश भाई, ब्र.कु.अनिता बहन तथा ब्र.कु.सीमा बहन समूह चित्र में। **3.शिकोहाबाद**- सांसद भ्राता चन्द्रसिंह जादोन को राखी बांधते हुए ब्र.कु.पूनम बहन। **4.दिल्ली (नरेला)**- रक्षाबन्धन के कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए बीजेपी उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली अध्यक्ष भ्राता नीलदमन खत्री, पार्षद भ्राता सुमित चौहान, पार्षद बहन सविता खत्री, ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र.कु.शक्ति बहन, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य। **5.महेन्द्रनगर (नेपाल)**- डी.एस.पी.भ्राता लोकेन्द्र भट्ट तथा उनके दल को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु.महिमा बहन तथा अन्य उनके साथ। **6.दिल्ली (ग्रेटर कैलाश)**- एयर इंडिया के सी.एम.डी.भ्राता अश्विनी लोहानी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.संगीता बहन। **7.दिल्ली (मौजपुर)**- भाजपा अध्यक्ष भ्राता मनोज तिवारी को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मणि बहन। **8.नई दिल्ली (साकेत)**- पी.टी.एस.के वरिष्ठ अधिकारियों को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.नीरू बहन तथा ब्र.कु.ज्योति बहन उनके साथ। **9.जगनेर (आगरा)**- एस.एच.ओ.भ्राता राजकमल सिंह को राखी बांधने के बाद ब्र.कु.एकता बहन तथा अन्य उनके साथ। **10.दिल्ली (चांदनी चौक)**- पार्षद भ्राता रविन्द्र कुमार को राखी बांधने के बाद ब्र.कु.संगीता बहन उनके साथ। **11.दिल्ली (सीताराम बाजार)**- एस.एच.ओ.भ्राता सुनील कुमार तथा पुलिस स्टाफ को राखी बांधने के बाद ब्र.कु.सुनीता बहन तथा ब्र.कु. गूँजन बहन उनके साथ।

1.नोयडा (सेक्टर-26)- 'फास्ट फॉरवर्ड टू न्यू पोसिबिलिटीज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सुदेश बहन, ब्र.कु.रमा बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.यशवन्त भाई तथा आई.टी.लीडर्स। **2.दिल्ली (पीतमपुरा)**- मीडिया इंस्टिट्यूट में राखी बांधने के बाद प्राचार्य बहन सुमित्रा जी, ब्र.कु.कनिका बहन, ब्र.कु.सुरेश भाई, ब्र.कु.अनिता बहन तथा ब्र.कु.सीमा बहन समूह चित्र में। **3.शिकोहाबाद**- सांसद भ्राता चन्द्रसिंह जादोन को राखी बांधते हुए ब्र.कु.पूनम बहन। **4.दिल्ली (नरेला)**- रक्षाबन्धन के कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए बीजेपी उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली अध्यक्ष भ्राता नीलदमन खत्री, पार्षद भ्राता सुमित चौहान, पार्षद बहन सविता खत्री, ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र.कु.शक्ति बहन, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य। **5.महेन्द्रनगर (नेपाल)**- डी.एस.पी.भ्राता लोकेन्द्र भट्ट तथा उनके दल को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु.महिमा बहन तथा अन्य उनके साथ। **6.दिल्ली (ग्रेटर कैलाश)**- एयर इंडिया के सी.एम.डी.भ्राता अश्विनी लोहानी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.संगीता बहन। **7.दिल्ली (मौजपुर)**- भाजपा अध्यक्ष भ्राता मनोज तिवारी को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मणि बहन। **8.नई दिल्ली (साकेत)**- पी.टी.एस.के वरिष्ठ अधिकारियों को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.नीरू बहन तथा ब्र.कु.ज्योति बहन उनके साथ। **9.जगनेर (आगरा)**- एस.एच.ओ.भ्राता राजकमल सिंह को राखी बांधने के बाद ब्र.कु.एकता बहन तथा अन्य उनके साथ। **10.दिल्ली (चांदनी चौक)**- पार्षद भ्राता रविन्द्र कुमार को राखी बांधने के बाद ब्र.कु.संगीता बहन उनके साथ। **11.दिल्ली (सीताराम बाजार)**- एस.एच.ओ.भ्राता सुनील कुमार तथा पुलिस स्टाफ को राखी बांधने के बाद ब्र.कु.सुनीता बहन तथा ब्र.कु. गूँजन बहन उनके साथ।

1.छर्रा (जलाली)- कमिश्नर भ्राता अजयदीप सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.रेखा बहन तथा ब्र.कु.गीता बहन। **2.गोण्डा.** जिलाधीश जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. दिव्या बहन। **3.मऊ-** जिलाधीश भ्राता ज्ञानप्रकाश त्रिपाठी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.विमला बहन। साथ में हैं ब्र.कु.श्रीराम भाई। **4.अमेठी-** जिलाधीश भ्राता प्रशान्त शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुमित्रा बहन तथा ब्र.कु.सुषमा बहन। **5.फतेहपुर (महादेवन टोला)-** जिलाधीश भ्राता संजीव सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.प्रियंका बहन। **6.शामली-** जिलाधीश भ्राता अखिलेश कुमार को राखी बांधते हुए ब्र.कु.राज बहन। **7.फिरोजाबाद-** जिलाधीश को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अंजना बहन तथा ब्र.कु.खुशी बहन। **8.गाजियाबाद (कवि नगर)-** जिलाधीश भ्राता राकेश पाण्डे को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.राजेश बहन। **9.इटावा-** जिलाधीश भ्राता जितेन्द्र बहादुर सिंह को राखी बांधते के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.दीप्ति बहन तथा ब्र.कु.पूनम बहन। **10.डिबाई-** जिलाधीश भ्राता अविनाश कृष्ण सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.कुसुम बहन। **11.अलीगढ़ (विष्णुपुरी)-** जिलाधिकारी भ्राता चन्द्रभूषण सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.रॉबिन बहन तथा ब्र.कु.मेघना बहन। **12.शाहजहाँपुर साउथ सिटी (फर्रुखाबाद)-** जिलाधिकारी भ्राता इन्द्र विक्रम सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.रंजना बहन।

रोगों का द्वार - माँसाहार

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

एक राजा को शिकार खेलने का बहुत शौक था। एक दिन अनेक घुड़सवारों के साथ वे किसी जंगल में शिकार खेलने गये। उन्होंने वहाँ खरगोशों का शिकार किया, उन्हें अपने घोड़े की पूँछ से बाँधा और महल की ओर लौटने लगे परन्तु कुछ ऐसा हुआ कि उनके साथी आगे बढ़ गये और महाराज पीछे छूट गये। वे जंगल में रास्ता भटक गये, फिर भी आगे बढ़ते गये। एक पेड़ के नीचे उन्होंने एक चारण को देखा। वे उसके पास गये और मार्ग के बारे में उससे पूछा। मरे हुए खरगोशों की दुर्दशा देखकर चारण को दया आ गई। राजा के प्रश्न का उत्तर देते हुए चारण ने कहा –

जीव वधताँ नरक गति, अवधताँ गति सग्ग।
हुँ जाणूँ दो वाटड्याँ, जिण भावे तिण लग्न।।

हे राजन्! जीव का वध करने वालों की गति नरक है और वध न करने वालों की गति स्वर्ग। बस, मैं तो ये दो मार्ग ही जानता हूँ। आपको जो रुचे उसी मार्ग पर चलिए। चारण की बात का राजा पर अच्छा प्रभाव पड़ा, उसने उसी समय शिकार का त्याग कर दिया।

राजा तो जाग गया परन्तु हम कब जागेंगे? हममें से हर कोई जानता है कि मनुष्य स्वाभाविक तौर पर माँसाहारी नहीं बल्कि शाकाहारी व फलाहारी है। माँस-मछली-अण्डा, बासी भोजन, मिर्च-मसाला, खटाई युक्त भोजन, तला हुआ भोजन व फास्ट फूड आदि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी नहीं हैं। ये तन व मन दोनों के लिए नुकसानकारक हैं।

कुछ लोगों की धारणा है कि मछली-अण्डों में प्रोटीन बहुत है परन्तु इनसे ज्यादा प्रोटीन तो दालों, सोयाबीन व मूँगफली में मिलता है। माँसाहारी व्यक्तियों की आयु बहुत कम होती है जबकि शाकाहारी व्यक्तियों की उम्र लम्बी होती है। इस तथ्य को आज विदेशों में भी मानने लगे हैं और माँसाहार बन्द कर शाकाहारी बनते जा रहे हैं। माँसाहार से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

सहनशक्ति और रोगप्रतिरोधक शक्ति भी माँसाहारी व्यक्ति की कम पाई जाती है। माँसाहारी पहलवान ढलती उम्र में शरीर में दर्द व दुर्बलता महसूस करने लगता है जबकि शाकाहारी सौ वर्ष तक की उम्र में भी हर कार्य करने में सक्षम रहता है। मनुष्य अपना जीवन शाकाहार पर बिता सकता है परन्तु माँसाहार पर जीवित नहीं रह सकता। माँस को लोग केवल स्वाद-वश प्रयोग करते हैं बाकी जीवन में इसकी अन्य कोई उपयोगिता है ही नहीं।

माँस चाहे किसी भी जीव-जन्तु का हो, वह मनुष्य के लिए विष-बराबर है। आलसी, बूढ़े व रोगी पशुओं का माँस कीटाणुओं से ग्रस्त रहता है। माँस को काफी देर तक पकाने पर भी ये कीटाणु नहीं मरते और बीमारी पैदा करते हैं। डॉक्टरों का तो यहाँ तक मानना है कि माँस खाने वालों के पेट में बड़े-बड़े कीड़े भी पाये जाते हैं, जो उन्हें अन्दर से खोखला कर देते हैं।

माँसाहार करने वाला व्यक्ति हिंसक और निर्दयी प्रवृत्ति का होता है और कभी भी सही निर्णय नहीं ले सकता। माँसाहारी व्यक्ति थोड़ी-सी शारीरिक मेहनत करने से ही हाँफने लग जाता है जबकि शाकाहारी काफी समय तक अथक श्रम कर सकता है क्योंकि शाकाहारी भोज्य-पदार्थों में गुण अधिक देर तक बने रहते हैं।

माँसाहार से होने वाली बीमारियाँ

माँसाहार से हड्डियाँ कमजोर होकर अन्त में गलने लगती हैं। माँस अमल-धर्मी पदार्थ है जो आँतों में जाकर सड़न पैदा करता है और अंतड़ियों में पाचन-क्रिया में बोझ होने के कारण पेट के कई रोग पैदा करता है। माँस

के अधिक सेवन से हृदयरोग और कैंसर जैसी भयंकर बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। इसके सेवन से अधिकतर जिगर रोग, गठिया, मूत्र रोग, श्वास रोग, अजीर्ण, रक्त-विकार, बुखार, माइग्रेन जैसे रोगों का सामना करना पड़ता है।

यदि बच्चों को भी माँस खिलाया जाये तो उन्हें गल-ग्रन्थियों की सूजन का खतरा रहता है। टाइफाइड और निमोनिया जैसी बीमारियों की जड़ों को माँस के कीटाणु ही मजबूत करते हैं। माँस के कीटाणु अपेंडिक्स में पहुँच कर बड़ी आँत में कोलाइटिस, गुर्दे और मूत्राशय में प्रदाह, छोटी आँत में सूजन और पित्ताशय में पहुँच कर पथरी पैदा करते हैं। क्षयरोग के कीटाणु भी माँस के द्वारा पेट में प्रवेश कर मनुष्य को रोगी बना देते हैं। कोई रोगी ठीक होने के बाद भी माँसाहारी बना रहता है तो रोगों की उत्पत्ति पुनः शुरू हो जाती है तथा मानसिक रोगों का खतरा भी बना रहता है।

अण्डा

लोगों की यह भूल है कि अण्डा शाकाहारी होता है। अण्डे खेत में पैदा नहीं होते बल्कि उत्पत्ति इनकी जीव-जन्तुओं द्वारा होती है। अण्डे तो लोग रोज खाते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि अण्डों के साथ लाखों-कीटाणुओं को निगल रहे हैं। ये कीटाणु अण्डों के साथ शरीर में प्रवेश करके अपनी वृद्धि करते हैं। जब इनकी वृद्धि अधिक हो जाती है तब रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसलिए अण्डों के सेवन से बचना चाहिए।

अण्डा खाने से होने वाली बीमारियाँ

कच्चा अण्डा खाने से पेशाब में अल्वयुमिन आने की सम्भावना बन जाती है। अण्डे का आमलेट जल्दी नहीं पचता। रक्तचाप एवं एग्जिमा जैसी खतरनाक व्याधि का खतरा रहता है। अण्डा खाने से सिरदर्द, खट्टी डकारें, उल्टी, दस्त व जी मिचलाना जैसे हालात बन जाते हैं। जिन लोगों को ब्लड प्रेशर, हृदयरोग, पित्त की थैली के रोग, गुर्दे की बीमारी व यकृत जैसे रोग हों, उन्हें भूलकर भी अण्डा नहीं खाना चाहिए। पानी में उबले हुए या भुने हुए अण्डे तैलिय पदार्थ से भी अधिक भारी होते हैं जो पूरी तरह से पच नहीं पाते।

गर्म देशों में खाये जाने वाले अण्डे पेट में ही सड़ने लग जाते हैं और एक तरह से विष पैदा करते हैं। अण्डा इतना हानिकारक है कि इससे शरीर में मंदाग्नि व पेचिस जैसे रोग पैदा होते हैं। अण्डे में हानिकारक वायरस (विषाणु) भी पाये जाते हैं। यह शरीर के पोषक तत्वों को असन्तुलित करता है तथा कफ भी पैदा करता है जो जिगर में जमा हो जाता है और रगों में जख्म व कम्पन्न पैदा करता है।

मछली

यह कहावत मिथ्या है कि जो लोग मछली का सेवन करेंगे, उनका दिमाग बहुत तेज बन जाता है। यदि ऐसा होता तो हर अमीर व्यक्ति अपने बच्चों को मछलियाँ खिला-खिला कर डॉक्टर, साइंटिस्ट, इन्जीनियर तथा महान व्यक्ति बना देता। परन्तु सत्य तो यही है कि हमारे देश के महान व्यक्ति जैसे लोकमान्य तिलक, प्रो.रामानुजम रानाडे, सी.वी.रमन जैसी हस्तियों ने इन चीजों को कभी हाथ तक नहीं लगाया।

मछलियाँ खाने से होने वाली बीमारियाँ

मछली खाने वाले व्यक्तियों में विष बनता रहता है क्योंकि मछलियाँ कीड़े, गन्दगी, मरे हुए जानवरों व मनुष्यों को खाती हैं जिससे कि यकृत में विष बनता है। मछली खाने वाले मनुष्यों में ज्यादातर चर्म रोग, बाल उड़ना, होंठ फटना, बदहजमी, पेट की बीमारियाँ आदि बने रहते हैं। मनुष्य के शरीर में पसीने की बदबू आने का एक कारण मछली सेवन भी है। ऐसी दुर्गन्ध में साँस लेना भी मुश्किल हो जाता है। मछली अन्य माँस की अपेक्षा अधिक विष बनाती है जिससे मनुष्य की उम्र कम हो जाती है। ■■■

1.मैनपुरी- जेल अधीक्षक भ्राता हरिओम शर्मा तथा जेलर भ्राता जे.पी.दुबे को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अवन्ती बहन। **2.गुरुसहायगंज (फर्रुखाबाद)-** पुलिस अधिकारी भ्राता अमरेन्द्र पीडी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीलम बहन। **3.बलिया-** पुलिस अधीक्षक भ्राता देवेन्द्र नाथ को राखी बांधते हुए ब्र.कु.उमा बहन। **4.फर्रुखाबाद (बीबीगंज)-** पुलिस अधीक्षक डॉ.अनिल कुमार मिश्र को राखी बांधते हुए ब्र.कु.मंजू बहन। **5.बड़हलगंज-** एस.डी.एम.भ्राता अरुणकुमार सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.राधिका बहन। 6.बिन्दकी- एस.डी.एम.भ्राता प्रमोद झा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सीता बहन। **7.नजीबाबाद-** एस.डी.एम. भ्राता उमेश कुमार मिश्रा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.गीता बहन। **8.दिल्ली (सन्त नगर)-** एस.डी.एम.भ्राता प्रदीप तायल को राखी बांधते हुए ब्र.कु.लाज बहन। **9.झण्डापुर (साहिबाबाद)-** एस.एच.ओ.बहन लक्ष्मी चौहान को राखी बांधते हुए ब.कु.विद्या बहन। **10.दिल्ली (साहिबाबाद)-** एस.एच.ओ.भ्राता जितेन्द्रकुमार को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सरिता बहन। **11.लाखना-** सेन्ट्रल बैंक प्रबन्धक भ्राता मनोजकुमार को राखी बांधते हुए ब्र.कु.वंदना बहन। **12.दिल्ली (सरूपनगर)-** एस.एच.ओ.भ्राता सुभाषचन्द्र मीणा को राखी बांधकर वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु.राजकुमारी बहन।

1.अयोध्या- जगदगुरु श्री दिनेश महाराज को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन तथा ब्र.कु.मुकेश बहन। **2.रसड़ा-बलिया-** श्रीनाथ बाबा मठ के मठाधीश को आत्मिक स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.जागृति बहन। **3.बरेली (सिविल लाइन्स)-** मंडलायुक्त भ्राता रणवीर प्रसाद को राखी बांधते हुए ब्र.कु.नीता बहन। **4.मेरठ (पल्लवपुरम)-** कृषि विश्व विद्यालय के निदेशक भ्राता ए.के.पंवार को राखी बांधने के पश्चात् ब्र.कु.उषा बहन उनके साथ। **5.नैनीताल-** रजिस्ट्रार (विजिलेन्स) भ्राता अनुज कुमार सनाल को राखी का सन्देश सुनाते हुए ब्र.कु.नीलम बहन। साथ में ब्र.कु.वीना बहन तथा अन्य। **6.रामपुर (बरेली)-** डी.आई.जी.भ्राता सिद्धू को राखी बांधते हुए ब्र.कु.संगीता बहन। **7.नोयडा-** न्यूजनेशन टी.वी.चैनल के वरिष्ठ एन्कर भ्राता दीपक चौरसिया को राखी बांधते हुए ब्र.कु.अदिति बहन। **8.दिल्ली (लोधी रोड)-** डॉ.मंगू सिंह, प्रबंध निदेशक, दिल्ली मेट्रो रेल कार्पो.लि.को राखी बांधते हुए ब्र.कु.गिरिजा बहन। **9.बरेली (चौपुला रोड)-** अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, भ्राता अविनाश चन्द्र को राखी बांधते हुए ब्र.कु.पार्वती बहन। **10.बरेली-बजरिया पूरनमल-** डी.आर.एम.भ्राता दिनेश कुमार को राखी बांधते हुए ब्र.कु.पारूल बहन। **11.आगरा (म्यूजियम)-** कलाकृति कल्चर एण्ड कन्वेंशन के निदेशक भ्राता अशोक जैन को राखी बांधते हुए ब्र.कु.माला बहन। **12.आजमगढ़-** वरिष्ठ पुलिम अधीक्षक भ्राता त्रिवेणी सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.रंजना बहन।

ईश्वरीय ज्ञान ने मेरी जिंदगी बदल दी

■■■ ब्रह्माकुमार सत्यपाल सिंह, भगवानपुर (रुड़की)

मेरा जन्म सन् 1960 में ग्रामीण परिवेश में एक साधारण परिवार में हुआ था। शुरू से ही दबंग किस्म का था। माता-पिता ने नाम जरूर सत्यपाल रख दिया था परन्तु आचरण नाम के बिलकुल विपरीत था। स्कूल मेरे लिए शिक्षा प्राप्त करने से ज्यादा लड़ाई-झगड़े और मनोरंजन का स्थान था। शिक्षकों से सजा भी मिलती थी परन्तु डाँट-मार खा-खाकर भी मेरे स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। स्कूल के बच्चों का दादा (डॉन) बन गया था। सब बच्चे मुझसे डरते थे। हाईस्कूल तक पढ़ने के बाद पढ़ाई छूट गयी।

कुसंग से बना व्यसनों का दास

नौकरी किसी की कर नहीं सकता था, नौकरी पर मुझे रखता भी कौन? पिता जी ने ट्रान्सपोर्ट के कार्य में लगा दिया। मेरी मुलाकात ट्रक ड्राइवरों से होने लगी। कहा गया है कि जैसी संगत वैसी रंगत। अगर कुमार्गी मित्रों का संग मिल जाता है तो देर-सवेर उनका असर पड़े बिना नहीं रहता। प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता खुद होता है। संगत का असर मेरे में भी आने लगा। बीड़ी-सिगरेट का सेवन तो पहले ही करता था। ड्राइवरों के संग शराब पीने की आदत और पड़ गयी।

पत्नी नहीं छुड़ा पाई व्यसन

पारिवारिक जीवन में एक से दो होने के बाद भी नशा करना जारी रखा। पत्नी के सामने नशा नहीं करता था। पत्नी ने व ससुराल वालों ने बहुत समझाया पर उनकी बात नहीं मानी। समझाते-समझाते सब थक कर चुप हो गये। मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ दिया गया। मेरा रास्ता साफ हो गया। मेरी खराब चलन की वजह से मुझे संयुक्त परिवार से अलग कर दिया गया। घरवालों ने सोचा, दो बेटों और दो बेटियों के पालने का बोझ पड़ेगा तो शायद सुधर जायेगा लेकिन मेरे में कोई सुधार नहीं आया, और ही बिगाड़ आता गया। शराब पीकर जब घर में घुसता तो बच्चे मुझे देखकर सहम जाते और अक्सर मम्मी-मम्मी कहते हुए अपनी माँ के पास जाकर रोने लगते थे। सामान्य होने पर जब पत्नी मुझे बच्चों की बात बताती तो बहुत दुख होता था। चाहता था, शराब छूट जाए परन्तु छोड़ नहीं पाता था। कई बार हठ से कुछ दिन पीना भी बंद किया परन्तु फिर पीना शुरू कर देता था। मेरा संग ऐसा था, मैं सुधरने की कोशिश करता परन्तु साथी मजबूर कर देते थे। शराब पीने की लत से बहुत सारी परेशानियों को भी झेला पर शराबियों के संग के कारण आदत से मजबूर था। सन् 2011 में इन्फेक्शन की वजह से मेरी तबियत खराब रहने लगी परन्तु मेरे अवगुण फिर भी चलते रहे। हमारे चाचा की एक सुपुत्री ब्रह्माकुमारी सविता बहन, डाकपत्थर में ईश्वरीय सेवा में समर्पित हैं। मैं उन्हें देखकर रास्ता बदल लेता था कि बहन जी मुझे लेक्चर पिलायेंगी।

देवी-देवताओं को समझता था भगवान

हालांकि मैं कोई पूजा-पाठी नहीं था। किसी प्रकार भी भक्ति नहीं करता था परन्तु नास्तिक भी नहीं था। मन्दिर में स्थापित सभी मूर्तियों को व तस्वीरों में चित्रित सभी देवी-देवताओं को अज्ञानता-वश भगवान मानता था। शिव और शंकर दोनों को एक ही समझता था। सन्तों के प्रति बड़ी ऊँची भावना थी।

आश्रम की तरफ हुआ खिंचाव

एक दिन चचेरे भाई चन्द्रपाल जी के घर पर अचानक जाना हुआ जिन्होंने कुछ समय पूर्व ही ब्रह्माकुमारी संस्था में जाना शुरू किया था। वे वहाँ सुनायी जाने वाली ज्ञान की बातें बताने लगे। मैंने कहा,

भाई जी, तुम आश्रम में जाते हो पर मैं वहाँ नहीं जा सकता क्योंकि मैं सब गलत काम करता हूँ। वे बोले, तुम मेरे साथ आश्रम पर चलना और वहाँ ज्ञान की बातों को समझना, अच्छी लगें तो सात दिन का कोर्स कर लेना। वो दिन सोमवार का था। मैंने कहा, आप कौन-से दिन आश्रम पर जाते हो? वे बोले, भाई, गुरुवार को जाता हूँ (भगवानपुर से रुड़की स्थित ब्रह्माकुमारी आश्रम लगभग 12 कि.मी.दूर होने के कारण रोज नहीं जाते हैं)। मैंने कहा, इस गुरुवार को तो मुझे काम है, अगले गुरुवार को आपके साथ आश्रम पर चलूँगा। उन्होंने कहा, ठीक है। मेरे मन में चल रहा था कि मेरे पास आठ बोतलें रखी हैं, पहले उन्हें खाली कर दूँ। आखिर वो दिन भी आया, उसकी पूर्व रात में मैं ठीक से सो नहीं पाया। मुझे कुछ खिंचाव-सा महसूस होता रहा इसलिए भाई जी को सुबह चार बजे ही फोन कर दिया। वे कहने लगे, भाई, सुबह के 5.30 बजे चलेंगे।

छूट गए सभी व्यसन

बाइक द्वारा भगवानपुर से रुड़की स्थित आश्रम का लगभग 20 मिनट का रास्ता है। मैं नहा-धोकर पाँच बजे भाई के घर पहुँच गया और वहाँ से हम दोनों आश्रम पर पहुँच गये। भाई कहने लगा, सामने जो गोल लाइट है और उसमें जो बीच में स्टार है, ये शिव बाबा का स्वरूप है। मैं जाकर बैठ गया। मुझे अजीब-सा आकर्षण होने लगा और अन्दर महसूस होने लगा मानो कोई शक्ति कह रही है, आ गया बेटा। मैंने भाई को बोला, मुझे कोर्स करना है। वो 7 जुलाई, 2015 का दिन था, तब से मेरे जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन की शुरुआत हो गयी। शराब सहित सभी नशे छूट गये।

स्वार्थी रिश्तों में मची हलचल

जब मैं सेवाकेन्द्र पर जाने लगा, शराब और अन्य सभी व्यसन छोड़ दिए तो लौकिक परिवार में हलचल मच गयी। मेरी युगल तथा मेरे दो जवान बेटे मेरे से नाराज हो गए। उन्हें भय लगने लगा कि कहीं ये घरबार ना छोड़ दे। पूरा परिवार हर तरह से मुझ पर आश्रित था। मेरे शराब छोड़ने पर वे खुश नहीं हुए। यह भी विडम्बना ही कहेंगे। संसार की उल्टी चाल देखिए, उन्होंने मुझे कहा, हम तुमको घर में शराब आदि सब लाकर देंगे परन्तु आश्रम न जाओ। मेरे मन में आया कि ये कैसे लोग हैं, मैं अच्छे रास्ते जा रहा हूँ तो भी अपने स्वार्थ के कारण मुझे रोक रहे हैं। मेरा मोह तो टूट ही गया है। एक बार तो सभी ने मिलकर मुझे मारा और घर से निकाल दिया परन्तु आठ दिन बाद माफी मांगकर वापस घर ले गए। यह भी मेरा कोई कर्म का हिसाब है, यह सोचकर मैं सब कुछ सह रहा हूँ। मैंने मन में ठान लिया है, जीवन को सन्मार्ग पर चलाने वाले शिवबाबा को कभी नहीं छोड़ूँगा। स्वार्थी परिवार के कारनामे देख दिल उनसे हटकर बाबा में और गहरा लग गया है।

बाबा ने बदल दी चेहरे की रंगत

उनके रोकने-टोकने और तानों से बचने के लिए शिवबाबा ने मुझे गजब की शक्ति दे दी है। मैं चुप रहता हूँ। मेरी युगल ने भी कोर्स किया है। अब मैं रोज मुरली सुनता हूँ। मेरे शुभ संकल्पों और शिव बाबा की मदद से भगवानपुर में किराये का मकान लेकर गीता पाठशाला शुरू हो गयी है। मैं रोज आत्मिक खुराक ग्रहण करता हूँ। गुरुवार और रविवार को प्रात: रुड़की सेवाकेन्द्र पर मुरली क्लास में जाता हूँ, बाकी दिन स्थानीय पाठशाला में जाता हूँ जिसमें भगवानपुर और आसपास के क्षेत्रों से लगभग 25 भाई-बहनें आते हैं। मुझे अब तक दो बार मधुबन में अव्यक्त बापदादा से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। मुझे पूरा निश्चय है कि अब कलियुग बदल सतयुग आने वाला है। जब से बाबा का बना हूँ, मैंने नए श्रेष्ठ जीवन की शुरुआत की है। ब्रह्माकुमारी बहनों के माध्यम से मिले परमात्म-ज्ञान ने मुझे सही राह दिखाई है। मैं प्रतिदिन अनेकों बार शिवबाबा का शुक्रिया अदा करता हूँ। बाबा ने मेरे चेहरे की रंगत ही बदल दी है। हरदम खुश रहता हूँ। जिससे मिलता हूँ, मुस्कराहट के साथ मिलता हूँ। अपने व्यवहार और बोली से दूसरों को भी खुशी देता हूँ। अब तो मन यही कहता है, 'वाह-बाबा-वाह' जो नरक से निकाल सुख-चैन की जिन्दगी बना दी। चाहता हूँ, यह ईश्वरीय ज्ञान विश्व के कोने-कोने में पहुँचे। ■■■

1.दिल्ली (पाण्डव भवन)- भारत के प्रथम लोकपाल अध्यक्ष जस्टिस पी.सी.घोष को राखी बांधते हुए ब्र.कु.पुष्पा बहन। **2.नोयडा (सेक्टर 33)**- सांसद भ्राता महेश शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु.मंजू बहन। **3.दिल्ली (पंजाबी बाग)**- सांसद भ्राता सुशील गुप्ता को राखी बांधते हुए ब्र.कु.कोकिला बहन। **4.कानपुर नगर (रतनलाल नगर)**- सांसद भ्राता सत्यदेव पचौरी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.रमा बहन। **5.आगरा (ईदगाह)**- सांसद भ्राता राजकुमार चाहर को राखी बांधते हुए ब्र.कु.अश्विना बहन। **6.दिल्ली (मोहम्मदपुर)**- सांसद बहन मीनाक्षी लेखी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.कंचन बहन। **7.गोरखपुर (हुमायूँनगर)**- विधायिका बहन संगीता यादव को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन। **8.रूरा**- विधायिका बहन प्रतिभा शुक्ला को राखी बांधते हुए ब्र.कु.प्रीति बहन। **9.आगरा (शास्त्रीपुरम)**- विधायिका बहन हेमलता दिवाकर कुशवाह को राखी बांधते हुए ब्र.कु.मधु बहन। **10.छर्रा (दहगवाँ)**- विधायक भ्राता महेश गुप्ता को राखी बांधते हुए ब्र.कु.शशिबाला बहन। **11.दिल्ली (कालकाजी)**- विधायक भ्राता अवतार सिंह को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रभा बहन। **12.दिल्ली (पालम कालोनी)**- पूर्व विधायक भ्राता प्रद्युम्न राजपूत को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सरोज बहन।

मनुष्य का जहरीला दांत ईर्ष्या

ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लान्ट, शान्तिवन

साँप अपने जहरीले दांत के कारण कुख्यात है क्योंकि वह क्षणभर में किसी के भी प्राणहरण कर सकता है। वैसे ही मनुष्य में भी एक गुप्त जहरीला दांत है जो किसी की भी अवनति कर सकता है, वह है ईर्ष्या। फरक केवल इतना है कि सांप अपने ही विष से कभी मरता नहीं परन्तु ईर्ष्यालु व्यक्ति ईर्ष्या में जलकर राख हो जाता है अर्थात् पतन को पा लेता है।

यादगार शास्त्रों में ईर्ष्या की चर्चा

मंथरा, कैकेई, दुर्योधन, कर्ण, विश्वामित्र, दुर्वासा..... किसी ने भी आज तक अपने बच्चों के ये नाम नहीं रखे। रखना तो छोड़ो, ये नाम कोई सुनना भी नहीं चाहते हैं क्योंकि इन नामों के साथ ईर्ष्या जैसा भयानक अवगुण जुड़ा हुआ है। दो कारणों से यह अवगुण तीव्र हानिकारक माना जाता है। एक, ईर्ष्यालु स्वयं के साथ-साथ दूसरों की प्रगति पर भी रोक लगा देता है। दूसरा, ईर्ष्या सदा अपने साथ द्वेष और निराशा को ले आती है। द्वेष, समाज से व्यक्ति का किनारा करा देता है और निराशा जीवन जीने की उमंग का नाश कर देती है। इसलिए चिन्तकजन प्राचीन काल से ही साहित्य के माध्यम से ईर्ष्या के प्रति मनुष्य को सावधान करते रहे हैं।

ईर्ष्या किस हद तक भीषण दुर्घटनाओं का कारण बन सकती है, इस बात का स्पष्ट वर्णन रामायण और महाभारत की कथाओं में किया गया है। बाइबल में ईर्ष्या को सात महापापों में से एक कहकर उसे त्याज्य बताया गया है। कुरआन कहता है, ईर्ष्या तुम्हारा नाश करे उससे पहले तुम उसका नाश करो। एक प्रसिद्ध राजनेता का कहना था, कैंसर से भी अधिक मात्रा में लोग ईर्ष्या से मरते हैं।

क्या होती है ईर्ष्या?

जैसे प्रेम, दया, करुणा, काम, क्रोध, लोभ आदि भावनाएँ होती हैं वैसे ही ईर्ष्या भी एक भावना है पर नकारात्मक है। वास्तव में यह अहंकार का विकराल रूप है। 'मैं और मेरा' का अभिमान जब विकराल रूप धारण करता है तब ईर्ष्या जन्म लेती है अर्थात् औरों की भलाई पर जलन शुरू होती है। औरों के साथ स्वयं की तुलना करने का संकल्प ईर्ष्या के संस्कार से उत्पन्न होता है। यह संकल्प उठते ही मस्तिष्क के हाईपोथेलामस से ऑक्सिटोसिन नाम का हार्मोन उत्पन्न होता है जिससे ईर्ष्या की भावनाएँ प्रकट हो कर मन-बुद्धि को अपने वश में ले लेती हैं। वास्तव में ऑक्सिटोसिन प्रेम को उत्पन्न करने वाला हार्मोन है परंतु संस्कार या संकल्प ईर्ष्या का होता है तो प्रेम का हार्मोन अपना रूप बदलकर ईर्ष्या को प्रत्साहित करता है।

जैसे, चुम्बक के आसपास चुम्बकीय वातावरण रहता है वैसे ही जब शुभ या अशुभ संकल्प मन में उत्पन्न होते हैं तब उन संकल्पों के अनुसार वातावरण में तरंगें फैलती हैं क्योंकि संकल्प एक महान शक्ति है। शुभ संकल्पों से प्रेम-स्नेह-एकता का वातावरण निर्मित होता है तो अशुभ संकल्प भय-वैर-विरोध की तरंगें फैलाते हैं। ईर्ष्या एक घातक अशुभ संकल्प है। जैसे, सांप को देखते ही सभी दूर भागते हैं क्योंकि उसका दांत जहरीला है, वैसे ही ईर्ष्यालु के संपर्क से भी दूर रहना चाहते हैं क्योंकि उसके संकल्प जहरीले हैं।

शरीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव

जैसे, अग्नि का स्पर्श शरीर को घायल करता है वैसे ही ईर्ष्या का स्पर्श मन को घायल करता है। ईर्ष्या के कारण एड्रिनल और कोर्टीसाल नाम के दो प्रकार के हार्मोन अधिक मात्रा में स्रवित होना शुरू कर देते हैं जिससे भयभीत होना, आवेश में आना, उच्च रक्तचाप, ड़ायबिटीज, उदासी (Depression), मांसपेशियों में ताकत की कमी, नींद की कमी आदि बीमारियाँ शुरू होती हैं। इन बीमारियों के प्रभाव से व्यक्ति निराश और दिलशिकस्त हो जाता है। सब के साथ सकारात्मक संबंध-सम्पर्क रखने से व्यक्ति समाज का एक अंग बनकर रहता है। संपर्क में रहने वालों को मदद कर सकता है और मदद ले भी सकता है लेकिन ईर्ष्यालु, औरों की बुराई का लक्ष्य रखने के कारण, न मदद कर सकता है, न ही मदद ले सकता है। जैसे, कारागृह की दीवार, कैदी को समाज से अलग कर देती है, वैसे ही ईर्ष्या भी एक कटु भावनाओं की दीवार है, जो सबके बीच रहते हुए भी व्यक्ति को लावारिस बना देती है।

आध्यात्मिक साधक की महाशत्रु

आध्यात्मिक साधना का लक्ष्य है स्वपरिवर्तन। परिवर्तन का आधार है स्वचिंतन अर्थात् खुद के गुण-अवगुणों को जानना, उन्नति की युक्ति रचना आदि। स्वचिंतन ही साधक का श्वास है लेकिन सदा औरों को ही देखने के कारण ईर्ष्यालु का स्वचिंतन समाप्त हो जाता है अर्थात् श्वास ही बंद हो जाता है, फिर तो सफलता की बात ही क्या रही? इसलिए, ईर्ष्या को साधक का महाशत्रु माना जाता है। अगर ईर्ष्या रूपी कांटे को समय रहते नहीं निकालेंगे तो धीरे-धीरे यह शूल बन जाएगा।

पुरुषार्थ के मार्ग में एक भयानक विघ्न

पुरुषार्थ में सफलता पाने का आधार है एकाग्रता। यह आती है प्राप्तियों को स्मृति में रखने से। लेकिन, ईर्ष्या के वश जब ध्यान अन्य पुरुषार्थियों की प्राप्ति की तरफ विचलित होता है तब स्वयं की प्राप्ति विस्मृत हो जाती है। इससे एकाग्रता रूपी अस्त्र का तो प्रयोग ही नहीं होगा। स्वयं को आत्मा समझकर परमपिता शिव परमात्मा को याद करना, यह है मानव से देवपद प्राप्त करने के लिए मुख्य साधना। इसके लिए व्यक्ति, वस्तु और वैभव की स्मृति को त्यागना पड़ता है परन्तु ईर्ष्या, हमें इन तीनों बातों में इस हद तक डुबो देती है कि लक्ष्य की ओर जाने वाला असली रास्ता दिखाई ही नहीं देता।

जो सर्व से दुआएँ लेता है वही पुरुषार्थी साधना में तीव्र गति से आगे बढ़ सकता है। दुआ लेने का साधन है पहले आप कहना अर्थात् दिल से दूसरों को आगे रखना। जो औरों को आगे रखता है वह स्वयं आगे है ही क्योंकि दुआओं का पात्र बनता है। लेकिन, ईर्ष्या का संस्कार दूसरों को पीछे खींचने के लिए दुष्प्रेरणा देता है। स्पर्धा में अगर एक खिलाड़ी, दूसरे खिलाड़ी को नीचे गिराने की कोशिश करता है तो वह सब की नज़र से खुद ही गिर जाता है, उसको स्पर्धा से सदा के लिए बहिष्कृत कर दिया जाता है। वैसे ही औरों के पुरुषार्थ को रोकने वाला साधक, सर्व की बद्दुआ का शिकार बनने के कारण, उन्नति के बदले अवनति को पा लेता है।

साधक को विजयी तब कहा जाता है जब स्वयं से, सर्व से और शिवपिता से संतुष्टता का प्रशंसा-पत्र लेता है परन्तु ईर्ष्यालु के कंधे पर सदा असंतुष्टता का हाथ रहने के कारण, संतुष्टता होती क्या है, यह बात वह भूल ही जाता है।

विजयमाला में पिरोने के लिए संस्कारों का मंगल मिलन मनाना अवश्यक है। एक मणके से दूसरा मणका अगर दूरी पर है तो माला बन नहीं सकती। ईर्ष्या, दो मणकों के बीच दीवार नहीं बल्कि पहाड़ बन जाती है। ईर्ष्या से मुक्त हुए बिना साधक को माला में स्थान मिलना असंभव है।

कहावत है, Comparison is the thief of joy (तुलना, खुशी की चोर है). खुशी और अतींद्रिय सुख ये दोनों आध्यात्मिक साधक को भगवान से मिले हुए वरदान हैं। लेकिन, जैसे गुब्बारे में कितनी भी हवा भरी हुई हो, कांटे की केवल नोक लगने से ही वह खाली हो जाता है, वैसे ही खुशी और सुख की अनुभूति को एक क्षण में उदासी में बदल डालती है यह ईर्ष्या।

क्या इस महामारी से छूट सकते हैं?

जहाँ चाह, वहाँ राह! खुशखबरी यह है कि हमें इस जंजीर से छुड़ाने लिए ही इस धरती पर अवतरित हुए हैं गुणों के सागर, सर्वशक्तिवान परमपिता शिव परमात्मा। केवल यह एक दृढ़ संकल्प चाहिए कि जिस संस्कार के कारण मैं अपने और दूसरों के लिए एक विघ्न बन बैठा हूँ, वातावरण को दूषित कर रहा हूँ, साफ दिल बन प्रेम के सागर शिवपिता को प्रत्यक्ष करने के बजाय उनकी निंदा कराने के निमित्त बन रहा हूँ, उस महारोग से मुझे मुक्त होना ही है।

पहला इलाज़ है सत्य का दर्शन

बीमारी अगर पहले चरण में है तो केवल ईश्वरीय ज्ञान की दवाई अर्थात् सत्यता की पहचान ही काफी है। चार प्रकार की सत्यता को जानने से ईर्ष्या का शमन हो जाता है। (1) हम सब आत्माएँ एक शिवपिता की संतान आपस में भाई-भाई हैं। भाई, अपना होता है, तो ईर्ष्या कहाँ से आई? (2) पंछी का मूल गुण है उड़ना, मछली का मूल गुण है तैरना। अगर मछली को पानी से निकालेंगे तो जी नहीं पाएगी। वैसे ही मुझ आत्मा का मूल गुण है प्रेम, न कि ईर्ष्या। (3) हमारा पिता परमात्मा प्रेम का सागर है। जैसे मनुष्यों के बच्चों में मनुष्यों के गुण, प्राणियों के बच्चों में प्राणियों के, पंछियों के बच्चों में पंछियों के गुण दिखाई देते हैं, वैसे ही हम भगवान के बच्चों में प्रेम, दया आदि दैवी गुण ही दिखाई देने चाहिएँ, न कि ईर्ष्या-द्वेष। (4) इस सृष्टि नाटक के हरेक अभिनेता को अपनी-अपनी भूमिका मिली हुई है। एक की भूमिका न मिले दूसरे से। हमें जो भूमिका मिली है उसके महत्व को ठीक से निभाते हुए जब आगे बढ़ेंगे तब शिवपिता के दिल को जीत सकेंगे।

सर्जन से छिपाओ मत

कई बार सत्यता को जानते हुए, मानते हुए और हमारे न चाहते हुए भी ईर्ष्या का तीव्र आक्रमण हम पर हो जाता है जिसको हम रोक नहीं पाते हैं। तब समझना चाहिए कि गांठ गाढ़ी है अर्थात् संस्कार गहरा है। इसकी शल्य चिकित्सा केवल रूहानी सर्जन शिवपिता ही कर सकते हैं लेकिन सर्जन से कुछ छिपाना नहीं। कहा जाता है, सच्चे दिल पर साहब राजी। जैसे, बच्चों की उन्नति की चिंता, बच्चों से भी अधिक माँ-बाप को रहती है, वैसे ही हमें विकारों के पिंजरे से छुड़ाने की चिंता, हम से भी अधिक शिवपिता करते हैं। उनके सामने अपनी कमजोरी को सच्चे दिल से बताना है। शारीरिक शल्य चिकित्सा के समय अनस्थीसिया देते हैं ताकि शरीर हिले नहीं, वैसे ही संस्कार को काटते वक्त बुद्धि हिले नहीं। इसके लिए एकाग्रता को साथी बनाकर कदम आगे रखना है। शिवपिता का यह वायदा है कि एक कदम आप बच्चों का और हजार कदम मेरे।

राख भी नहीं बचेगी

इस चिकित्सा का नाम है ज्वालारूप का योगाभ्यास। मन और बुद्धि से स्वयं को ज्योतिबिंदु आत्मा समझ, परमज्योति शिवपिता को परमधाम, जो आत्माओं का लोक है, वहाँ याद करना, यह है सहज राजयोग। जब बुद्धि याद में एकाग्र हो जाती है और एकाग्रता दीर्घ समय तक निरंतर रहती है उस अवस्था को कहते हैं ज्वालारूप अवस्था। जैसे ज्वालामुखी कठोर चट्टानों को पिघला देता है, वैसे ही ज्वालारूप की याद कठिन से कठिन संस्कारों को ऐसे भस्म कर देती है जैसे कपूर जलने के बाद उसकी राख तक नहीं बचती है।

जैसे कांटे वाले पेड़ उखाड़कर फूलों के बीज बोते हैं, वैसे ही निरंतर याद में रहना अर्थात् शिवपिता को एक सुअवसर देना कि वे आत्मा के आसुरी संस्कार मिटाकर दैवी संस्कार धारण कराएँ। इस प्रक्रिया में हमारी तरफ से शिवपिता को केवल एक ही सहयोग चाहिए, मन-बुद्धि की एकाग्रता और उस एकाग्रता में निरंतरता।

परहेज की सख्त जरूरत

इलाज़ के साथ-साथ इस बात का कड़ा परहेज चाहिए कि कर्मेंद्रियों से कोई भी पापकर्म न हो क्योंकि पाप करने से आसुरी संस्कार की जड़ और भी गहरी हो जाती है। उसको मिटाने के लिए कई गुना अधिक समय और कड़ी मेहनत वाली साधना की जरूरत पड़ सकती है। इसलिए, हर कर्म करने के पहले, यह पाप है या पुण्य, इस

बात को सोचकर कदम आगे रखना अति आवश्यक है।

अब नहीं तो कब नहीं

सहज राजयोग की विधि से संस्कार परिवर्तन करने का सुअवसर केवल वर्तमान यानी संगमयुग में ही मिलता है। शिवपिता द्वारा हम आत्माओं के अंदर भरे ईर्ष्या-द्वेष के कांटे निकालकर, उस जगह पर स्नेह के बीज बोने का समय केवल अब है। ये रूहानी सर्जन हमें न पूर्वजन्म में मिले थे और न ही अगले जन्म में मिलने वाले हैं। अगर हम इस जन्म में तीव्र पुरुषार्थ कर ईर्ष्या को भस्म नहीं करते हैं तो जरा उस भयंकर परिणाम को सोचिए! अगले जन्म में भी इस महारोग के साथ ही हमें जन्म लेना पड़ेगा जहाँ रूहानी सर्जन नहीं है। इसलिए, अभी नहीं तो कभी भी नहीं। इसी क्षण से हम ईर्ष्या से संपूर्ण मुक्त बनने की साधना शुरू करेंगे और सफलतामूर्त बनेंगे। ■■■

मानव, मानव से प्रेम करना सीखे

■■■ ब्रह्माकुमारी उषा, जटही पोखरा, छपरा (बिहार)

जब किसी मनुष्य पर कोई समस्या आती है तो वह भगवान से गुहार करने लगता है कि मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो। लेकिन, भगवान की संतान होकर हम यदि भगवान की अन्य संतानों को पीड़ा पहुँचाते हैं, तो क्या भगवान हमारी पुकार सुनेंगे? कदापि नहीं। उनकी सन्तान को संकल्प, वाणी, कर्म से हम दुख देते हैं तो भगवान हमसे कभी खुश नहीं हो सकते। दुख देने की भावना के बोझ से हमारे अन्दर प्रेम के बजाय नफरत की चिनगारी उड़ती रहेगी। नफरत हमारे विकास की राह पर बहुत बड़ा रोड़ा है। अत: भगवान को खुश करने के लिए जाति-भेद, धर्म-भेद, रंग-भेद, ऊँच-नीच का भेद, धनी-गरीब का भेद भूल जायें क्योंकि ये भेद भगवान की देन नहीं हैं। हम सभी आत्माएँ भाई-भाई एक-दूसरे से प्रेम करना सीखें, तब भगवान हमसे खुश होंगे और हम पर रहम करेंगे।

हमारे किसी बच्चे को कोई यदि किसी प्रकार की चोट पहुँचा रहा हो तो क्या हमें उस व्यक्ति पर रहम आयेगा? किसी भी प्रकार से उसकी मदद हम करेंगे? नहीं कर सकते हैं। इसी प्रकार, मानव को आहत कर हम भगवान से मदद नहीं ले सकते हैं। चाहे लाख चिल्लायें, पूजा-पाठ करें, तीर्थ भ्रमण करें लेकिन मानव को सता कर हम कभी भी सुखी और खुश नहीं रह सकते। अत: दुनिया में सबसे प्रेम से चलना सीखें। प्रेम से ही आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक और मानसिक विकास होगा। हमारा भारत स्वर्णिम बनेगा।

जब हम नि:स्वार्थ स्नेह का दान करते हैं तो लोगों की दुआ और सहयोग पाते हैं। हमारे अंग-अंग प्रफुल्लित हो उठते हैं। इसकी भेंट में नफरत को अपनाने से हमारे रोम-रोम में विष भर जाता है और चेहरे से खुशी गायब हो जाती है। अत: हम सभी मानव अपने अंदर प्रेम रूपी सुगन्ध भरकर जहाँ-तहाँ फैलायें, सदा खुश रहें और खुशी बाँटें।

प्रेम को कायम रखने के लिए इसके सबसे बड़े लुटेरे अहंकार को त्यागना होगा। यही सभी बुराइयों की जड़ है जबकि नम्रता सभी अच्छाइयों का भंडार है। संसार में प्रेम सर्वोत्तम है, इससे असंभव काम भी संभव हो जाते हैं। यह वह साधन है जिससे बिगड़ा हुआ काम भी बन जाता है। कर्म एक बीज है जिसके उगने पर हमें दुख या सुख की प्राप्ति होती है। सुख पाने के लिए अच्छे कर्म रूपी बीज बोयें। अच्छे या बुरे कर्म कोई देखे या न देखे लेकिन उनका फल तो निकलता ही है। ■■■

ऊँची दीवारों से मिली ऊँची प्रेरणा

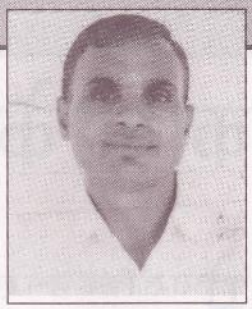

■■■ ब्रह्माकुमार सुनील, कारागार, बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश)

सुना करते थे कि परमात्मा की योग की अग्नि से आत्मा का स्वरूप बदल जाता है। ईश्वरीय ज्ञान में आने से यह प्रत्यक्ष हो रहा है। जिस जेल की दीवारों को देखकर रोना आता था, प्यारे शिवबाबा ने उन्हीं दीवारों से प्रेरणा देनी शुरू कर दी। ऊँची-ऊँची दीवारों को देखकर खुद को ऊँचा उठा लो, खुद को स्थिर कर लो, बाहर मत झाँको, स्वयं के अन्दर झाँको। यह सोचता रहता था कि परिवार गया, धन गया, सम्बन्ध गया, सम्मान तो चकनाचूर हो गया, सामने विपत्ति ही विपत्ति खड़ी है, क्या होगा? बाबा की श्रीमत ने कहा, शिव पिता, ब्रह्मा माँ, ब्रह्माकुमार भाई, ब्रह्माकुमारी बहनें, पूरा परिवार मिल गया। अविनाशी ज्ञान-धन मिला, गुण मिले, शक्तियाँ मिली, खुद परमात्मा ने अपना बनाया। जब भगवान ही अपना हो गया तो संसार तो हो ही गया। जीवन भी नया हो गया।

बाबा के बोल पूरे हो गये

एक मुरली में बाबा ने कहा, अनपढ़ भी पढ़े हुए बन सकते हैं। मैं आठवीं ही पढ़ा हुआ था। बाबा के ये महावाक्य मन को छू गये और अभ्यास शुरू हो गया। मुरली लिखने, पढ़ने से सुधार होने लगा। बाबा का प्यार तो मिला ही, प्रशासन की मदद भी मिली जिसको स्वीकारते हुए इगनू से पढ़ाई शुरू कर दी। पेपरों के लिए दूसरी जेल मेरठ गया। कुछ ही दिनों में इन्टर का परीक्षा फल हाथों में आ गया। पच्चीस साल पढ़ाई छोड़े हो चुके थे। साहब ने बधाई देते हुए रिजल्ट थमाया तो आँखों से आँसू छलक पड़े, रोक नहीं सका। अन्दर से शिवबाबा का शुक्रिया किया, बाबा आपके बोल पूरे हो गये।

जेल तपोभूमि अनुभव हो रही है

मनुष्य कहते हैं, जेल में सभी अपराधी ही रहते हैं परन्तु अनुभव कहता है, सभी अपराधी नहीं होते। देशभक्त, इतिहासकार, कवि, लेखक, गायक, चिन्तक – विभिन्न क्षेत्रों की अनेक महान आत्माओं का जन्म जेल से होते देखा है। एक किताब में कहानी पढ़ी थी, स्वतन्त्रता सेनानी तरुण को जेल में डाल दिया गया। वे सोचते रहते थे, भाग जाऊँ या मर जाऊँ मगर यहाँ कुछ नहीं हो सकता। अचानक संकल्प आया, परमात्मा की तरफ मुड़ गये, परमात्मा के प्यार में लीन कर लिया स्वयं को और प्रसिद्ध चिन्तक अरविन्द घोष के नाम से जाने गये। जेल नया जन्म देने वाली, परिवर्तन करने वाली तपोभूमि भी कहलाती है, जो बाबा के प्यार में रहते हुए अनुभव हो रही है।

बन्धन में है सारा जमाना

बन्धन में केवल हम नहीं, बन्धन में तो सारा जमाना है। गलती करके जेल आये, जेल ने परमात्मा से मिलाया, वो भी मुफ्त में, कोई कुछ भी कहे मगर अब जेल बाबा का आश्रम लगती है। तीन जगह मुरली की क्लास चलती है। बहुत बन्दी भाई ज्ञान का आनन्द ले रहे हैं। खूब सेवा मिल रही है। यही चाहना होती है कि सभी को बाबा का परिचय मिल जाये, दिल कह रहा है,

खुद को समझ आत्मा, परमात्मा शिव को याद कर,
तू तो है देवता, मत किसी से फरियाद कर।
भौतिक सुखों की चाह में मत जिंदगी बरबाद कर,
तेरी राह के शूल भी फूल बन जायेंगे नेकी कर।
अपने दिल से सदा शुभ संकल्पों की बरसात कर,
जिस राह से तू गुजरेगा उस राह पर मेरी नजर है।
तू पत्थर से पारस बनेगा बस थोड़ी-सी तो कसर है।।

साथियों का साथ लेते हुए, प्रशासन का भरपूर प्यार पाते हुए परमपिता परमात्मा का बारम्बार शुक्रिया करता हूँ। ■■■

कायदे के साथ फायदे भी जानें

■■■ ब्रह्माकुमार अनिल विधाटे, राहुरी (अहमदनगर)

मेरा लौकिक जन्म एक खेडेगाँव में सामान्य परिवार में हुआ। बचपन से ही मुझे अध्यात्म में रुचि है। लौकिक पढ़ाई के बाद मुझे सरकारी स्कूल में शिक्षक की नौकरी मिल गयी। नौकरी लगने के एक वर्ष बाद मुझे ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माऊंट आबू, राजस्थान जाने का शुभ अवसर मिला। वहाँ जाकर बहुत खुशी मिली। जीवन में पहली बार मैं इतना खुश हुआ कि तब से आज तक 16 साल हो गए, मैं हमेशा बेहद खुशी में ही रहता हूँ।

दुख है मैं, मेरा के कारण

मैंने ब्रह्माकुमारीज का सात दिन का ज्ञान का कोर्स किया। प्रतिदिन मुरली सुनता या पढ़ता हूँ और राजयोग का अभ्यास करता हूँ। हर साल मधुबन जाता हूँ। शिवबाबा का परिचय मिलने से सब बोझ बाबा पर छोड़ मैं सदा हँसी-खुशी से जिंदगी जी रहा हूँ। आजकल लोगों के पास सब कुछ है लेकिन खुशी, आनंद नहीं है। सारी दुनिया तनाव में है। इन्सान न खुद को पहचानता है, न खुदा को (भगवान) को। मैं, मेरा और देहाभिमान के कारण दुनिया में दुख, अशान्ति, कलह, क्लेश, रोग, व्यसनाधीनता, झगड़े, मारामारी ही दिखाई पड़ रहे हैं।

यहाँ कोई स्थाई नहीं है

वे भूल गए हैं कि यह सृष्टि रंगमंच है, हमारा हर एक का कुछ दिनों के लिए यहाँ पार्ट है। सभी जन यहाँ मेहमान हैं। यहाँ कोई भी स्थाई नहीं है। ज्ञान की यह बात बुद्धि में रहने से इन्सान हल्का रहता है। लेकिन, सब लोगों ने यहाँ मोह और आसक्ति का ऐसा कारोबार रच लिया है मानो वे सदा यहाँ रहने वाले हों। आज मैं जो खुशी भरी जिंदगी जी रहा हूँ, इसका मुख्य आधार है ब्रह्माकुमारीज परिवार। इस परिवार जैसा परिवार दुनिया में कहीं नहीं है। निस्वार्थ वृत्ति, सबके प्रति स्नेहभाव, अच्छे विचार, अच्छा आहार, अच्छा संग, सुंदर दिनचर्या – यह इस परिवार की विशेषता है। पूरी दुनिया में ब्रह्माकुमारीज की शाखाएँ हैं। सभी जगह समान कानून-कायदे हैं। चिन्तनीय विषय यह है कि ब्रह्माकुमारीज विद्यालय के कायदे लोगों को मालूम हैं लेकिन फायदे मालूम नहीं हैं।

बिना मूल्य मिलता है ज्ञान

मैं अपना श्रेष्ठ भाग्य समझता हूँ कि छोटी आयु में मुझे इस परिवार का परिचय मिला। मैंने जब से यह ज्ञान जीवन में धारण किया है, तब से शिवबाबा ने मुझे बहुत सुखी किया है। अच्छी जिंदगी जीने के लिए अच्छी सोच की जरूरत है। आजकल इन्सान बुरी सोच के कारण गिर पड़ा है और दुख की जिंदगी जी रहा है। मानव जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान ब्रह्माकुमारीज में बिना मूल्य मिलता है। इस कारण ही ब्रह्माकुमारीज का मुख्यालय माउण्ट आबू (राजस्थान) सारी दुनिया के आकर्षण का केन्द्र बना है। वहाँ का वातावरण इतना पवित्र है कि वहाँ गए व्यक्ति का अपने घर लौटने को मन नहीं करता। वहाँ निस्वार्थ वृत्ति से सारा कारोबार चलता है। यह संस्था सन् 1936 से, सकारात्मक विचारधारा से समाज के उत्थान का कार्य कर रही है। इस विद्यालय का कारोबार पूरी दुनिया में महिलायें संभालती हैं। दादी जानकी इस विद्यालय की मुख्य प्रशासिका हैं। 'चरित्र' इन्सान को कितना ऊपर उठाता है, यह ब्रह्माकुमारीज संस्था को देखकर समझ में आता है। यहाँ न किसी को गर्व है, न अहंकार, न जात-पात का भेद, न धर्मभेद, न गरीब-अमीर, स्त्री-पुरुष का भेद। सब एक भगवान के बच्चे अनुभव करते हुए अपना-अपना कर्म करते रहते हैं। सामान्य किसान से देश के राष्ट्रपति पद तक का कोई भी व्यक्ति ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान पढ़ और सुन सकता है। मेरे जैसे लाखों लोग इस विद्यालय से जुड़े हैं और यहाँ गीता सिर्फ पढ़ाई नहीं जाती बल्कि धारण की जाती है, यह इस विद्यालय की विशेषता है।

मेरा निवेदन है कि इस अलौकिक परिवार में शामिल होकर अपने जीवन को सुंदर और सरल बनाएँ।

■■■

मधुबन है पिता का घर

■■■ ब्रह्माकुमारी कल्पना, पीलीभीत (उ.प्र.)

सन् 2013 में, मई मास में, दिल्ली, मॉडल टाउन सेन्टर से ईश्वरीय ज्ञान की मेरी शुरूआत हुई। सेन्टर का बोर्ड देखकर ही खिंची चली गई। वहाँ ईश्वरीय ज्ञान के बारे में जानकारी मिली जो मुझे बहुत ही अच्छी लगी। उस जानकारी से भक्ति तथा पूजा-पाठ का अर्थ समझ में आया। वहाँ बच्चे पढ़ रहे थे इसलिए जाना हुआ था, बच्चों की पढ़ाई पूरी होने पर मैं पीलीभीत लौट आई और स्थानीय सेवाकेन्द्र पर नियमित क्लास करने लगी। सन् 2014 में मेरी छोटी बहन कविता ने भी पीलीभीत सेन्टर पर कोर्स कर लिया और बाबा में पूर्ण निश्चयबुद्धि होकर ज्ञान को धारण करने लगी।

चालबाजियों से हुए परेशान

बाल्यकाल में ही माँ का देहावसान हो जाने के कारण लौकिक पिता ने ही माता-पिता दोनों का प्यार देकर हम दोनों बहनों को पाला-पढ़ाया। उनकी हम दो ही लौकिक पुत्रियाँ हैं। अब दोनों ही शादीशुदा हैं। पिताजी मेरे साथ ही रहते थे। पिता की छत्रछाया में हमने मासूमियत भरा जीवन जीया था। उनकी छत्रछाया में हम हर मुश्किल रूपी आँधी-तूफान से सुरक्षित रहे। शादी के बाद दुनिया की चालबाजियों से काफी परेशान हुए। निर्दोष होते हुए भी बहुत कुछ सहन करना पड़ा परन्तु पिताजी को हमने कुछ पता पड़ने नहीं दिया। सुनाकर उन्हें दुखी करना हम नहीं चाहते थे। ज्ञान में आने के बाद सब समझ में आ गया है कि कोई दोषी नहीं है, हर आत्मा अपना-अपना रोल प्ले कर रही है।

जीवन हो गया खाली और उदास

लौकिक पिता ने 5 दिसम्बर, 2014 को भौतिक शरीर त्याग दिया। जीवन काल में ही वे देहदान कर चुके थे। वे बहुत ही सात्विक प्रवृत्ति के आध्यात्मिक व्यक्ति थे। उनकी अन्तिम इच्छा के अनुसार उनके शरीर के महत्वपूर्ण अंग जरूरतमंद लोगों को दान कर दिये गये। पिता के शरीर छोड़ने के बाद हम दोनों बहनों का जीवन बिल्कुल खाली, उदास और अकेला हो गया। शरीर से सभी लौकिक कार्य तो कर रहे थे परन्तु आत्मा को एक पल भी चैन नहीं था। कैसे दिन-रात कट रहे थे, पता नहीं। उनकी कमी असहनीय हो रही थी। हमारी इस पीड़ा का एहसास किसी को भी नहीं था।

अलौकिक शक्ति के साथ का अनुभव

लौकिक पिता के देह त्यागने के कुछ महीने पहले ही हम दोनों बहनें शिवबाबा का ज्ञान ले चुकी थी। मुझे लगता है कि शिवबाबा को हमारी भावी पीड़ा का ज्ञान था इसलिए वे हमें ज्ञान में ले आए थे। उन्हीं दिनों (जून, 2015) मधुबन में तीन दिवसीय शिविर का आयोजन होने जा रहा था। हमारे सेवाकेन्द्र से कोई नहीं जा रहा था। हमने निमित्त बहन को मधुबन जाने की अपनी इच्छा बताई। वे बहुत ही असमंजस में थी कि इनको अकेले भेजें या नहीं, फिर भी उन्होंने हमारी गहन इच्छा को पहचान कर, मधुबन के एक भाई जी के नाम, हमारे आने के संदर्भ में पत्र लिख कर दे दिया। सफर लम्बा था, कभी ऐसे बाहर अकेले गये नहीं थे। इसके बावजूद भी न कोई डर था, न तनाव कि अकेले जा रहे हैं। कोई अलौकिक शक्ति अपने साथ होने का बराबर अनुभव करा रही थी।

आओ, मेरे लाडले, आओ

हम रात में 11.30 बजे आबू स्टेशन पर उतरे और देखा कि वहाँ पर और भी कई भाई ट्रेन से उतर रहे हैं। उन भाइयों ने कहा कि आप घबराओ नहीं, बाबा साथ है, हम लोग सब व्यवस्था करवा देंगे। वे लोग अपने साथ ही हमें स्टेशन से बाहर लेकर आये जहाँ पहले से ही मधुबन जाने के लिए बसें खड़ी थी। हम सभी बहुत ही आराम से मधुबन आ गये। जैसे ही हम द्वार के अन्दर पहुँचे, हमारा

1.मऊ- बिहार के राज्यपाल महामहिम भ्राता फागू चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विमला बहन। साथ में माऊण्ट आबू से ब्र.कु. श्रीराम एवं ब्र.कु. अमरजीत भाई। **2.हैदराबाद (शान्ति सरोवर)-** पासवर्ड टू हैप्पीनेस विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद आई.पी.एस.बहन मिश्रा, तेलंगाना के गृहमंत्री भ्राता मोहम्मद अली, ब्र.कु.कुलदीप बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, तेलंगाना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता अमरनाथ गौड तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **3.हाथरस-** उ.प्र.के कैबिनेट मंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.भावना बहन। **4.ओझर-** मध्यप्रदेश के गृहमंत्री भ्राता बाला बच्चन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रेणुका बहन। **5.बैंगलोर (कुमारा पार्क)-** कर्नाटक के ग्राम विकास तथा पंचायतराज मन्त्री भ्राता के.एस.ईश्वरप्पा को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.सरोजा बहन। **6.झाबुआ-** मध्यप्रदेश के कृषि मंत्री भ्राता सचिन सुभाष यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.जयंती बहन। **7.भोपाल-** भाजपा के उपाध्यक्ष भ्राता शिवराजसिंह चौहान से सामाजिक सरोकार पुरस्कार-2019 प्राप्त करते हुए ब्र.कु.डॉ.रीना बहन। **8.फरीदाबाद (सेक्टर-11)-** आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद जे.सी.बोस यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति प्रो.दिनेश कुमार, डॉ.रंजना अग्रवाल, लायन्स क्लब गवर्नर भ्राता बी.एम.शर्मा, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.राधेश्याम भाई तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : October, 2019.

शान्तिवन (आबू रोड)-
वास्तुशास्त्रियों के लिए आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय परिवहन राज्यमंत्री भ्राता विजय कुमार सिंह, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.संतोष बहन, ब्र.कु.करुणा भाई, ब्र.कु. भरत भाई, ब्र.कु.रानी बहन तथा अन्य।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
माइंड, बॉडी मेडिसिन विषयक 38वें राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.बनारसीलाल शाह, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.योगिनी बहन, बिहार के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता मंगल पाण्डे, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, पूर्व विधायक भ्राता भूपेन कुमार तथा अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)-
"शान्ति एवं सद्भाव के लिए आध्यात्मिकता -- मीडिया की भूमिका" कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संदीप चौहान, कार्यकारी सम्पादक, महाराष्ट्र वन चैनल, मुम्बई, बहन निर्मला सी. यलगार, सहायक निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, बेंगलोर, भ्राता पूरन प्रकाश, विधायक, उ.प्र., विक्रम राव, अध्यक्ष इण्डियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. करुणा, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, प्रो. कमल दीक्षित एवं अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)-
यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा 'गति, सुरक्षा, आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.दिव्यप्रभा बहन, पैसेन्जर सर्विसेस कमेटी के चेयरमैन भ्राता रमेशचन्द्र रत्न, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, डी.आर.एम.भ्राता रमेश कश्यप, ब्र.कु.सुरेश शर्मा तथा अन्य।